भगवत् कृपा

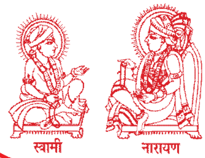

साकार प्रगट ब्रह्म को जो पहचाने, वो परम को पाये

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली द्विमासिक सत्संग पत्रिका

वर्ष 27 अंक :3	15.5.2004 शनिवार (मई-जून)	वार्षिक चंदा : 50.00

गुरुजी का संबंध अनमोल दिया है मुक्तों...

✻ ***1000-1200 हरिभक्तों का समूह... मानो घर-घर की सभा हो ऐसा लगता था !***
जितने भी हरिभक्त बैठे थे, उन सब के मुँह पर निष्ठा की मस्ती दिखाई पड़ती थी।

– प.पू. स्वामिजी

✻ ***चारों ओर 'दिव्यता-दिव्यता' भरा वातावरण दिखाई पड़ता था।***

– प.पू. निर्मलस्वामिजी

✻ ***प्यॉरली स्पीरीच्युअल फंक्शन था।***

– पू. वशीभाई

अंतर से निकले ये उद्‌गार ही दर्शा रहे हैं कि **28 मार्च** को मनाई गई **प.पू. गुरुजी की जयंती का जलवा** कैसा होगा ?

उत्सव से करीब 20-25 दिन पहले कार्ड इत्यादि छपवाने व अन्य सेवाओं की तैयारियों में सभी संत, बहनें, युवक, गृहस्थ भाई-भाभियाँ भक्ति अदा करने की भावना से जुट गए थे। 28 मार्च की दोपहर तक दूर के व रोज मंदिर आते सदस्य–वे सभी आ चुके थे और सेवा में लग गए... फिर भी–

सभी का कुछ टालने कहो,
प.पू. काकाजी महाराज की स्मृति कराने कहो
या
अब हमें भजन का व्यसन ही पड़ जाए;

इस हेतु इतने व्यस्त माहौल में भी 28 मार्च के दिन प.पू. गुरुजी ने दो बारी 40-40 मिनिट का भजन करवाया।

शाम को तकरीबन पौने सात बजे प.पू. स्वामिजी, प.पू. साहेब, प.पू. गुरुजी, प.पू. निर्मलस्वामिजी व अन्य महानुभाव कलात्मक रूप से फूलों द्वारा सुसज्जित गलीचे पर होकर सभा मंडप में पधारे। गलीचे की दोनों ओर से छोटे बच्चों ने मोती के आकार की सफ़ेद ड्रेस पहन कर गुलाब की पंखुड़ियों से गुणातीत स्वरूपों व संतों–महानुभावों का स्वागत किया। गलीचे के दोनों ओर सामूहिक रूप से जलते हुए दीये मानो संकेत दे रहे थे कि हमारे जीवन में आज जो भी उजाला है, वह प.पू. गुरुजी के संबंध और कृपा के कारण है। दूसरी ओर गड़गड़ाती तालियों के बीच *'अक्षरधाम से गुरुजी पधारे...'* भजन से माहौल दिव्यता से भर गया ! भक्तों की उमंग-उल्लास प.पू. गुरुजी के प्रति की प्रीति व भक्ति का सम्यक् परिचय दे रहा था।

प.पू. गुरुजी जनवरी महीने से अपनी बातों में एक रहस्य की बात अक्सर करते आ रहे थे कि–

'भगवान स्वामिनारायण की प्रगट की निष्ठा जो हमारे जीव में बैठी और सत्संग का ऐसा संबंध मिला, वह तो मोती की बरसात बरसे और जो लाभ होता है ऐसी प्राप्ति हो गई है। यह बात यदि हम समझ कर दिल की सच्चाई से मान लें तो धन्य-धन्य हो जाएंगे - निहाल हो जाएंगे।'

इसी बात को मद्देनज़र रखते हुए आज के शुभ दिन स्टेज के पीछे के पर्दे पर बादलों का आसमान बना कर सांकेतिक डेकोरेशन किया गया था, जहां मध्य में श्री अक्षरपुरुषोत्तम महाराज व उनके दाएं-बाएं ब्रह्मस्वरूप शास्त्रीजी महाराज, गुरुवर्य योगीजी महाराज, गुरुहरि प.पू. काकाजी महाराज व प.पू. पप्पाजी महाराज की मूर्तियाँ हंस पर विराजमान थी। सारा डेकोरेशन बहुत ही जीवंत, सादगीभरा व सौम्य लग रहा था। श्रीजी महाराज व मूलअक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी के हाथों से प.पू. गुरुजी के सोफे पर मोतियों की वर्षा होती दर्शाई गई थी, मानो प.पू. काकाजी द्वारा हम पर मोती की वर्षा यानि– दिल्ली गुणातीत समाज के लिए प.पू. गुरुजी भेंट दिए हैं। और... जैसे राजहँस मोती का ही चारा चुगता है, वैसे हम मुक्तों में गुण-दोष देखे बिना सिर्फ प्रभु का संबंध देख कर, प.पू. काकाजी व प.पू. गुरुजी की मूर्ति को धारते हो जाएं !

तत्पश्चात् सभी स्वरूपों ने अपना-अपना स्थान ग्रहण किया। प.पू. गुरुजी की जयंती का उत्सव था, सो प.पू. गुरुजी के लिए बीचोंबीच सोफा रखा था। लेकिन, कमर की तकलीफ के कारण वह सोफा प.पू. स्वामिजी को खूब आरामदायक रहेगा, ऐसी भावना-भक्तिभरे दिल से प.पू. गुरुजी ने आग्रहपूर्वक प.पू. स्वामिजी को उस सोफे पर बिठाया।

आवाह्न, धून–भजन की गूंज से सभा की शुरुआत हुई... प्रासंगिक उद्‌बोधन में सर्वप्रथम **प.भ. भद्रायुभाई जानी** ने सभा को संबोधित किया। अन्य मुक्तों में मुंबई से **प.भ. ओ.पी. अग्रवालजी** व दिल्ली सत्संग समाज की शुरुआत के समय से जुड़े पुराने जोगी **प.भ. विमलभाई दवे** ने भी अपने भाव प्रकट किए।

इस बार के निमंत्रण कार्ड के कवर पेज पर ताश के पत्ते दिखाए गए थे। **प.पू. गुरुजी की एक विशेषता है कि कोई भी प्रसंग हो, कोई भी चीज हो जो उनकी आँखों से गुज़रे या उनकी दृष्टि में आए, उसे वो सत्संग से या प.पू. काकाजी द्वारा कभी भी करी बात से जोड़ कर ही देखते हैं।** तो, ताश के पत्तों का प्रिंसिपल लेकर प.पू. काकाजी ने जो एक बात समझाई थी कि ताश में बावन पत्ते होते हैं और बावन पत्तों से हम नॉर्मली खेलते हैं। लेकिन त्रेपनवां पत्ता होता है जोकर ! और जो ताश खेलते हैं वे जानते होंगे कि बाजी जीतने के लिए जोकर किसी भी कार्ड के ऊपर चलाया जा सकता है। **यूं त्रेपनवां पत्ता हमारे लिए है– 'स्वामिनारायण महामंत्र' ! गुणातीत स्वरूप की स्मृति के साथ यदि हम वह लेंगे, तो हमारे जीवन की हर समस्या का हमें हल मिल जाएगा।** कार्ड में प.पू. गुरुजी ने आशीर्वाद रूप संक्षिप्त में लिखवाया भी था कि इस त्रेपवें पत्ते को हम अपने जीवन में बार-बार आजमाएं–हर बार जीत हमारी ही होगी। इस बात को सभी आसानी से समझ पाएं, सो प.भ. राकेशभाई ने सभा में निमंत्रण कार्ड की गहराई को समझाया भी।

समढियाळा के **प.पू. निर्मलस्वामिजी**, हरिधाम से आए **पू. त्यागवल्लभस्वामिजी**, ताड़देव के योगेश्वर एवं प.पू. गुरुजी के प्रिय सखा **प.पू. वशीभाई** ने महिमागान करा। **प.भ. विकास मल्कानीजी** ने भी अपने अनुभवों को व्यक्त किया। **प.पू. साहेब से** खूब नज़दीकी से **जुड़े प.पू. अध्यात्मानंदस्वामिजी** भी इस अवसर पर आए। उन्होंने अद्‌भुत दृष्टांत द्वारा प.पू. गुरुजी की महिमा का दर्शन कराया और प.पू. गुरुजी को शाल, फूलों एवं मोतियों का हार अर्पण किया। यह देख कर भी यही लगता था कि आज का स्टेज डेकोरेशन 'गॉड गाईडेड' ही था।

इसी के साथ सभी स्वरूपों के प्रति भावना व्यक्त करने हारविधि का कार्यक्रम भी था।

प.पू. स्वामिजी को प.भ. मल्कानी अंकल ने,
प.पू. साहेब को प.भ. नासा साहेब ने,
प.पू. गुरुजी को प.भ. विजयपालजी ने
एवं
पू. निमित्तस्वामी व संतों और मंदिर के सेवकों ने मिल कर दो हाथ मिलाते हुए मैत्रीभाव–सुहृद्‌भाव के सिद्धांत का संकेत देता हार पहनाया व दिल के आकार का भव्य कार्ड भी अर्पण किया जिसमें दर्शाया था कि–

जैसे श्रीजी महाराज ने प्रसन्नता रूप मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी को अपनी पाघ पहनाई थी, वैसे ही प.पू. काकाजी महाराज ने प.पू. गुरुजी को अपना कोट पहना कर हमें उनके अंतर की प्रसन्नता के पात्र की अनमोल भेंट दी है।

अक्षरज्योति की बहनों ने प.पू. गुरुजी की 67 वीं जयंती निमित्त प.पू. काकाजी की भिन्न-भिन्न 67 मूर्तियाँ लगा कर हार बनाया था, जिसे प.भ. कन्हैयालालजी प.पू. गुरुजी को पहनाने गए, तो प.पू. गुरुजी ने वह हार खुद न पहन कर प.पू. साहेब को पहनवाया।

प.पू. गुरुजी के इस जेस्चर के पीछे उनके भीतर का मर्म छिपा था। प.पू. साहेब अब की बार जो अनोखे अपनेपन व आत्मीयता के दावे से प.भ. विजयपालजी के यहाँ एवं मंदिर में रुके, इससे प.पू. गुरुजी के अंतर को एक सुकून मिला कि **प.पू. साहेब ने सिर्फ बातों में ही नहीं और ना ही औपचारिक रूप से, बल्कि प.पू. काकाजी की भाँति नैसर्गिक सर्वदेशीय सुहृद्भाव का दर्शन कराया** !

ऐसे ही प.भ. ओ.पी. अग्रवालजी भी प.पू. गुरुजी के लिए रिबन का कलात्मक हार बना कर लाए थे, जो उन्होंने प.पू. गुरुजी को अर्पण किया।

वडोदरा से आए प.भ. राजुभाई परिख ने भी अपनी भावना व्यक्त करने प.पू. गुरुजी को फूलों का हार अर्पण किया।

तत्पश्चात् प.पू. निर्मलस्वामिजी, पू. वशीभाई व अन्य महानुभावों को हार व कलगी से सम्मानित किया गया।

हारविधि के बाद **सत्यवती कॉलोनी** से आए **प.भ. मोहन बंसलजी** ने खूब संक्षेप में ही प.पू. गुरुजी की महिमा खूब मार्मिक रूप से बताई ! मंदिर के हर एक उत्सव पर हाज़िर होते आत्मीय स्वजन **श्री मांगेराम गर्गजी** ने भी प.पू. गुरुजी के प्रति अपने भाव व्यक्त किए।

तत्पश्चात् केक अर्पण किया गया। यह जो केक बनाया गया था, उसके पीछे भी यही भावना थी कि प.पू. गुरुजी के रूप में हम पर बरस रहे मोतियों को हम बटोर लें - कोई कोरा न रहे.....और उसी भावना को पू. राकेशभाई ने भजन की पंक्तियों में उजागर किया–

धरशो न कोई छतरी, हे जाजो सहु कोई पलळी....
हे ... सहु तमे ना रहेशो कोरां रे,
आज मोतीनी थाय ल्हाणी...
आजे वालो शतधारे खूब-खूब वरस्यो रे लोल....

भजन की इन पंक्तियों का अर्थ यह था कि–

तुम कोई भी छाता मत रखना, सब भीग जाना....
तुम कोई भी कोरे नहीं रह जाना,
आज मोती की बरसात हो रही है...
आज प्यारे प्रभु खूब-खूब बरस रहे हैं...

प.पू. गुरुजी की जयंती की शाम और भी भक्तिमयी तब बन गई, जब प.भ. राकेशभाई ने प.पू. काकाजी महाराज व प.पू. गुरुजी के लिए बनाए गए नए भजन एक अनोखे लहजे में गाए... जिसे सुन कर प.पू. स्वामिजी, प.पू. साहेब व प.पू. गुरुजी अंतर से राजी हुए बिना रह नहीं सके...

समय काफी हो चुका था, सो प.पू. साहेब व प.पू. स्वामिजी को सर्वप्रथम आशिष प्रदान करने याचना करी। प.पू. स्वामिजी व प.पू. साहेब के आशिष के पश्चात् अंत में– जैसे कि प.पू. गुरुजी ने कहा था कि यदि समय होगा, तो मैं बात करूंगा... यूं, प.पू. गुरुजी ने खूब कम समय में मार्मिक सूझ देते हुए सभी पर आशिष वर्षा करी। रात को पौने ग्यारह बजे उत्सव की समाप्ति हुई। लेकिन– अपने हर एक उत्सव की विशेषता यह है कि भले तीन-चार घंटे तक सभा चले, पर किसी को भी समय का पता नहीं चलता। ऐसा ही लगता है कि समय रूक जाए और सभा यूं चलती ही रहे... सभा विसर्जन के बाद सभी ने महाप्रसाद लेकर प्रस्थान किया।

दूर-सुदूर के सभी हरिभक्त गुणातीत स्वरूपों के आशिष व भक्तों के अंतर के उद्गार से लाभान्वित हो सकें, इस भावना से नीचे प्रस्तुत कर रहे हैं–

प.भ. भद्रायुभाई

...खूब-खूब धन्यवाद स्वामिनारायण भगवान को कि जो स्वरूप का दर्शन करोड़ों जन्मों की साधना–तपस्या के बाद भी ना हो, उसे हमारे लिए बहुत सुगम और सहज कर दिया। आशीर्वाद दे दिया कि ऐसे ब्रह्मस्वरूप संतों द्वारा मैं पृथ्वी पर अखंड प्रगट रहूँगा। ऐसे ब्रह्मस्वरूप संतों–गुणातीत संतों का–इनके साथ रहने का–समागम का–इनकी सेवा का जो हमें मौका मिला, यह हमारा बहुत बड़ा परम सौभाग्य है। ऐसा कहते हैं–मानते हैं और एक्स्पीरियन्स भी किया है कि–**भगवान हर एक की जिंदगी में कम से कम एक बार ऐसा मौका जरुर देते हैं कि अगर उस मौके का लाभ उठा लिया जाए, तो उस व्यक्ति का बेड़ा पार हो जाता है। एक जागरूक सक्सेसफुल पर्सन वो बन जाता है, अगर उस ओपोर्च्युनीटी को उसने टाईमली एवेल कर लिया हो। फिर वो व्यक्ति चाहे कैसा भी हो–सब यही मानते हैं कि वो बहुत ही होशियार, बहुत काबिल, बहुत समझदार बंदा है। कितना आगे निकल गया ?** पहले कहां था और आज कहां पहुँच गया !

कुछ ऐसी परिस्थिति आज मेरी भी है। हम सभी के जीवन में एक ऐसी ओपोर्च्युनीटी आई, ऐसा क्षण आया—जब गुरुजी ने हमें अपनी दृष्टि में ले लिया, अपना संबंध दे दिया ! **प्रभु के-ब्रह्म के हम संबंधी बन गए !** मेरी कोई साधना नहीं, कोई तपस्या नहीं, मेरे अंदर कोई क्वालिफिकेशन्स भी नहीं। और... जो प्रभु मिले उन्होंने मेरी कोई कसौटी भी नहीं करी। जैसा था वैसा स्वीकार कर लिया। एक बहुत बड़ी लॉटरी लग गई और वह भी बिना टिकट, बिना क्वालिफिकेशन्स ! एक स्टेटस ही बदल गया... अब क्लासिस चल रही हैं कि कैसा था और कैसा बनना है—उसकी।

'स्टेटस' काकाजी और गुरुजी के संबंध का है। तो उसके अनुसार वर्तना भी है। पहले अपने आपको 'मावजीभाई' या मैं कुछ हूँ— यूं समझते थे, अब प्रभु के दास का दास बनना है। पहले—जो मैं कहूँ या जो मैं मानूँ या जो मैं सोचूँ वही सही और आज साथी-मुक्तों की हाँ में हाँ करनी है। हमारे स्वभाव, प्रकृति, मान्यताएं, दोष, बाह्यदृष्टि—उसकी जगह अब निर्दोषबुद्धि, दिव्यभाव, स्वभावरहित, ठहरावरहित गुरुमुखी—जैसे प.पू. काकाजी 'साहेब' के लिए कहते थे, उस राह पर अग्रसर होना है...

छोटे-छोटे कई प्रसंगों से हम खूब विचलित हो जाते हैं, लेकिन ख्याल करें कि कितनी कठिन परिस्थिति होगी, जब योगीबापा के अभिप्राय के लिए—उनकी भक्ति के लिए काकाजी, पप्पाजी, स्वामिजी जैसे गुणातीत पुरुषों को अपने प्राणपुरुष से ही—भले स्थूल रूप से—दूर रहना पड़ा... कभी-कभी ऐसा ख्याल करके एकदम कंपकपी-सी हो जाती है कि कैसी परिस्थिति रही होगी वो। हमारे यहां—गुरुजी दो दिन के लिए बाहर जाते हैं, तो कैसे मुँह लटक जाते हैं ? एक सूनापन-सा आ जाता है। लेकिन ऐसे गुणातीत पुरुष अपने पर प्रसंग लेकर हमें जरुर सिखाते हैं कि अपने स्वरूप के अभिप्राय की भक्ति के लिए कुछ भी आड़े नहीं आना चाहिए—चाहे दुनिया के आगे कितने भी बुरे दिखाई पड़ें-चाहे कुछ भी हो जाए, लेकिन स्वरूप को मोहताज़ नहीं करना।

ऐसी गुणातीत परंपरा के—काकाजी और गुरुजी के हम हैं। तो हमारा वर्तन भी ऐसा ही होना चाहिए। आज के दिन गुरुजी व सभी गुणातीत स्वरूपों के चरणों में यह प्रार्थना कि हम चाहे कैसे भी हैं, लेकिन आपके हैं। तो आप ऐसे आशीर्वाद दें कि हम सब भी काकाजी व गुरुजी के अभिप्राय में जुड़ कर आपस में मिलजुल कर एक कुटुंब भावना से आपकी एवं इस योगी परिवार की शोभा बढ़ा पाएं....

प.भ. ओ.पी. अग्रवालजी

प.पू. काकाजी महाराज के साक्षात्कार का ५३वां वर्ष चल रहा है और इस बार प.पू. गुरुजी की जयंती का जो कार्ड है, उसमें ५३वें अंक का महत्त्व बताया गया है कि वह कितना सांकेतिक है। बहुत सुंदर बताया है कि किसी भी परिस्थिति में जब कोई भी कार्ड काम ना करे, तो ताश के खेल में जैसे जोकर इस्तेमाल करते हैं, ऐसे हमें दिए 'स्वामिनारायण' मंत्र का उपयोग करके पार निकल सकते हैं। ऐसे ही सांकेतिक आज प.पू. गुरुजी का ६७वां जन्म दिन मना रहे हैं—जिसका योग यानि—६ प्लस 7 'तेरह' होता है जो कि गुरुजी की बर्थ डेट है। इस १३ मार्च (= ३) २००४ को भी यदि जोड़ें तो वो भी 'तेरह' ही होता है। सांकेतिक यह कि 'तेरह' यानि सब कुछ 'तेरा' ! हम भी इससे ऐसा संकेत लें कि प्रभु ! सब कुछ तेरा ! 'सब कुछ प्रभु का ही'—ऐसा मान कर चलें यह भी 'तेरह' का अंक हमें संकेत दे रहा है।

हमारे जीवन में सबसे सुखद घटना तो ये बनी कि प.पू. गुरुजी हमें मिले और हमें उन्होंने स्वीकार किया। आज ही अखबार में पढ़ रहा था कि **'सद्गुरु'** मिलना बहुत कठिन और उससे भी कठिन **'सत्संग'** का मिलना और सत्संग मिलने के बाद उनकी **'कृपा'** होना, वो और भी कठिन बात है। हम कितने भाग्यशाली हैं कि हमें बिना कठिनाईयों के प.पू. गुरुजी के रूप में सच्चे सद्गुरु मिले, सत्संग भी मिला और उनकी खूब अनुकम्पा भी हम लोगों पर है...

गुरुजी की सरलता आज हर एक को स्पर्श कर जाती है कि सच में वे प्रभुस्वरूप संत हैं। वे कितनी सहजता से हमारे साथ, हमारे लिए दिन और रात अथक् परिश्रम करते रहते हैं। एक बार गुरुजी ने बताया था कि **गॉड नेवर स्लीप !** ऐसे ही हमारे गुरुजी चौबीस घंटे अपने भक्तों के लिए हाज़िर बैठे ही रहते हैं... जब हम हमारे व्यवहार की प्रॉब्लम उन्हें बताते हैं, तो **जैसे वो उनकी खुद की प्रॉब्लम है,** यूं उसके पीछे लग कर सोल्व करते हैं... और **हर एक प्रॉब्लम का हल यही बताते हैं कि— 'भजन करना, हम भी भजन करेंगे...'** लेकिन हम भजन करने वाली बात को भूल जाते हैं, भजन नहीं

करते; फिर भी हमारा काम नहीं बिगड़ता। इसमें से मैंने एक बात समझी है कि उन्होंने **दूसरी बात जो कही कि हम भी भजन करेंगे,** वो उनका भजन चालू ही रहता है हमारे लिए। **उस भजन के फलस्वरूप हमारी प्रॉब्लम सोल्व हो जाती है...** लेकिन हम भजन नहीं करते। ऐसे प्रसंग द्वारा प्रभु हमें उसका ख्याल भी दिलाते हैं और काल, कर्म, माया से हमारी रक्षा भी करते हैं... हम सभी के जीवन में कई कितने प्रसंग बनते हैं और हमने अनुभव किया है कि हमें कैसा संबंध मिला है ! स्वामी की बातों में भी एक जगह लिखा है कि **परेशानी आए तो क्या करना ?** बहुत सरलता से लिखा है कि **'स्वामिनारायण, स्वामिनारायण' भजन करना...** प्रसंग पर हम ये चीज मान लें...

आज के मंगलकारी दिन काकाजी महाराज, गुरुजी व सभी स्वरूपों के चरणों में प्रार्थना कि हमारे मन, बुद्धि की क्लचीज़ से हमें मुक्ति दिला दें और अभी जिस कक्षा पर हम हैं, उससे हमें आगे ले जाएं और जो ज्वार-भाटे हमारे व्यवहार में आते रहते हैं, उसके लिए तो भजन-धून का आपने रास्ता बताया ही है—लेकिन आपके साथ के संबंध में हमारे जीवन में कभी भी-कोई भी ज्वार-भाटा ना आए ऐसी आपके चरणों में प्रार्थना !

प.भ. विमलभाई दवे

...मेरे ख्याल से **संतों का तो कोई जन्मदिन नहीं होता है, ना कोई मरण दिन होता है,** ना इनकी आयु का कोई नाप होता है... उम्र चली जाती है हमारी, लेकिन साधु और संत की कोई उम्र नहीं होती है क्योंकि **नश्वर जो देह है, उससे इनका कोई संबंध नहीं होता है। इनका संबंध आत्मा और परमात्मा से होता है।** इसीलिए यदि आत्मा अजर और अमर है, तो इसकी कोई उम्र नहीं होती है। आज के दिन प.पू. गुरुजी चाहे वे ६७ साल के भी हों, लेकिन हम उनकी शत् आयु के लिए भी यदि शुभकामना करें तो वो भी कम है; क्योंकि इनकी आत्मा अमर है।

जब मंदिर की नींव डल रही थी, तब मैं प.पू. काकाजी-प.पू. गुरुजी के पास आता था। लेकिन इसका अर्थ यह नहीं है कि अब मैं इनके पास ना आकर इनके संबंध में नहीं रहा या उनके सान्निध्य में नहीं रहा या उनका प्रेरणा स्रोत मेरे पास नहीं रहा। ऐसा कभी नहीं हुआ...

समाज में हमें किस प्रकार से चलना है, उठना है-बैठना है, व्यवहार करना है, अपने परिवार को चलना है, समाज को चलना है, देश को चलना है— वो हम धर्म के आधार पर चलाना चाहते हैं और धर्म का आधार क्या है ? धर्म किसलिए है ? मनुष्य को ऊपर उठाने के लिए धर्म है। तो ये जो 'स्वामिनारायण' की मैं बात करता हूँ—धर्म की बात करता हूँ वह यह कि इन्होंने यहां आकर लोगों को ऊपर उठाने की बात करी। **बौद्धिक स्थिति से उठा कर आध्यात्मिक भूमिका में ले जाने की बात करी...**

हमारे देश में ऐसे संत-अवतार प्रगट हुए हैं, जिन्होंने हमारे देश की आध्यात्मिक शक्ति को बनाए रखा है... गुरुजी ने यहां उत्तर भारत के अंदर जब यहां 'स्वामिनारायण' का मंदिर बना भी नहीं था, तब छोटे से मकान के अंदर शुरुआत करी थी। मुझे मालूम है—बहुत कम हरिभक्त यहां इकट्ठे होते थे; इनमें से मैं भी एक था। लेकिन आज जिस रूप को मैं देख रहा हूँ, उसे देख कर लगता है कि हमारी इस आध्यात्मिक सृष्टि में बहुत वृद्धि हो चुकी है और यह वृद्धि आगे से आगे बढ़ती जाएगी, यदि गुरुजी का हम पर ऐसा ही प्रेमभाव रहा, इनका सान्निध्य रहा तो...

आज हम संतों की वाणी को सुनने के लिए इकट्ठे हुए हैं। यदि इन्हें सुनने के बाद हम दस प्रतिशत भी घर ले जाएंगे—अपने व्यवहार में उतार लेंगे, तो शायद हमारे जीवन में परिवर्तन आ जाएगा। बहुत बड़े फिलोसोफर **जे. कृष्णमूर्ति** ने कहा है, **व्यक्ति बदलेगी तो समाज बदल जाएगा, समाज बदलेगा तो देश बदलेगा। सो, हमें अपने आपको सुधारना है।** यदि हम अपने आप को सुधार सकते हैं, तो हम समाज को सुधार पाएंगे। धर्म का आधार और आस्था ही यही है...

आज के इस प्रागट्य दिन पर पू. गुरुजी को मैं अपने इन शब्दों से इस प्रकार से शुभकामनाएं दे सकता हूँ—मैं तो प्रार्थना करता हूँ स्वामी सहजानंदजी को कि— गुरुजी लंबे अरसे तक शायद अंनतकाल तक इस पृथ्वी पर इनकी प्रेरणा, प्रवचन, शुभाशीष हम सब के ऊपर बरसाते रहें और इनका स्वास्थ्य भी अच्छा बना रहे।

काकाजी आज हमारे बीच में नहीं हैं, लेकिन वे भी एक प्रेरणा स्रोत हमारे लिए रहे हैं। जो भी आज कुछ देख रहे हैं, उसके पीछे उनके आशीर्वाद यहां रहे हुए हैं... यदि हम ईश्वर में विश्वास रखते हैं—यदि हम अपने ईश्वरीय अवतारों में

विश्वास रखते हैं, तो इतना जान लिजिएगा कि इस पृथ्वी पर यदि ईश्वर है और है भी, क्योंकि– **'ईशावास्यम् ईदम् सर्वम् यत् किञ्च जगत्याम् जगत्'** –सारा विश्व जो है वो सिर्फ ईश्वरमय है, ईश्वर का ही है, ईश्वर द्वारा है, ईश्वर का इसमें वास है। ये जो स्वामी की प्रेरणा हमारे पास है, गुरुजी की प्रेरणा हमारे पास है; वो एक अवतारी पुरुष के रूप में–प्रागट्य स्वरूप के रूप में हमारे पास वो चेतना आज भी है। **इस चेतना को लेकर यदि हम आगे बढ़ेंगे, इस जीवन को ऊपर उठाएंगे, तो मनुष्य का जो स्वरूप आज है उसको हम बदल पाएंगे।**

विनोबाजी से मैंने एक प्रश्न पूछा था कि आप किसको संत कहेंगे ? तो उन्होंने मुझे बताया था कि जो **सिर्फ अपने लिए कार्य करता है, वो पशु है। अपने और दूसरों के लिए कार्य करता है, वो मनुष्य है** और **सिर्फ दूसरों के लिए ही कार्य करता है, उसको हम संत कहेंगे** और **आज वो संत हमारे साथ हैं !** यदि हम संत बन पाएं तो बहुत अच्छी बात है। लेकिन यह इनका सौभाग्य है। शायद ईश्वर ने उनको इसके लिए ही बनाया है, जो दूसरों के लिए करते रहते हैं... आज के दिन पर यह मंगल कामना करता हूँ कि इस प्रकार से इनके भक्तों के लिए, इस समाज के लिए–इनके उत्कर्ष के लिए गुरुजी सौ वर्ष की आयु पाएं और वे हमारे लिए प्रेरणा रूप बने रहें...

प.पू. निर्मलस्वामिजी

आज हम खूब-खूब पवित्र वातावरण में बैठे हैं। ईष्टदेव भगवान स्वामिनारायण की दिव्य चेतना में बैठे हैं। आज हर साल की तरह गुणातीत पुरुषों के चरणार्विंद में गुरुजी का प्रादुर्भाव मनाने हम इकट्ठे हुए हैं। कोई व्यक्तिपूजा के लिए हम इकट्ठे हुए नहीं हैं। परमतत्त्व को पाने के लिए हम आज इकट्ठे हुए हैं। आज गुरुजी के जन्म दिन पर हम सब गद्‌गद् होने के लिए इकट्ठे हुए हैं, हर्षित होने के लिए भी इकट्ठे हुए हैं। आज हम देखते हैं कि **गुरुजी खुद भजनिक हैं और समाज को भजनिक बनाया है।** आज हम ऐसे दिव्य वातावरण में बैठे हैं, आध्यात्मिक वातावरण में बैठे हैं कि ब्रह्मतत्त्व का यहाँ पूरा-पूरा दर्शन हो रहा है। तो, गुरुजी के चरणों में–साहेब, स्वामिजी, काकाजी, पप्पाजी के चरणकमलों में प्रार्थना करते हैं कि गुरुजी जैसी साधुता-भजन हम सबके जीवन में सम्यक् रूप से उतरे...

पू. त्यागवल्लभस्वामिजी

...आज का अवसर हम सबके लिए बड़ी खुशी का यह अवसर है। बड़ी खुशी का अवसर इसलिए नहीं है कि बहुत अच्छे भजन यहां गाए जाते हैं, बहुत अच्छी रोशनी है, बहुत अच्छा डेकोरेशन करा है, बहुत अच्छी बैठक व्यवस्था है, बहुत अच्छा प्रसाद– ये सारी चीजों को ध्यान में रखते हुए आज के अवसर को हम नहीं देखते हैं। आज का अवसर हमारे लिए बहुत सौभाग्य का इसलिए है कि गुरुजी से कुछ मांगने का–गुरुजी के चरणों में प्रार्थना करने का दिन है आज।

तो आज के दिन यही बात ध्यान में रखें कि शास्त्रीजी महाराज का संकल्प था कि उत्तर भारत में अक्षरपुरुषोत्तम महाराज का जयघोष हो–यहां मंदिर की स्थापना हो। शास्त्रीजी महाराज और योगीजी महाराज का वो संकल्प तो कभी अन्यथा नहीं हो सकता। लेकिन शुरु-शुरु में उसके लिए निमित्त बनने की बात थी–बहुत ही कठिन यह बात थी, लेकिन काकाजी का संकल्प था और वो सकंल्प साकार करने के लिए गुरुजी ने अपने मन को अमन करके, समन करके काकाजी के चरणों में अपनी भक्ति समर्पित करने का दृढ़ संकल्प किया। और... आज हम देखते हैं कि हमारी आत्मा की यात्रा को काकाजी की ओर चलाने के लिए–अक्षरपुरुषोत्तम महाराज की ओर चलाने के लिए गुरुजी ने क्या नहीं किया है ? हमारे पुराणों से तो काफी दृष्टांत हमें प्राप्त हो सकते हैं। सत्यकाम जाबाली की बात देखें, तो सत्यकाम जाबाली गुरु के पास गए थे 'ब्रह्मविद्या' प्राप्त करने के लिए। लेकिन गुरु ने एक गाय देकर आज्ञा दी कि जब चार सौ गाय हो जाएं, तब तुम्हें वापिस आना है। तो गुरुजी ने और क्या किया है ? जिस समय दिल्ली में रहने के लिए कोई जगह नहीं थी। वो दिन भी देखे हैं कि सुबह कोई भोजन के लिए बुलाए तो ठीक है, वर्ना मंदिर में जो भी छोटी व्यवस्था थी उसी से... पूरी कालोनी का विस्तार भी ज्यादा नहीं था। नया-नया डेव्लप्मेन्ट होना शुरु हुआ था। दीवार इतनी गर्म हो जाती थी कि जिसमें बैठना भी मुश्किल हो जाता था। ऐसी कठिन परिस्थितियों में गुरुजी के चेहरे पर वो ही मुस्कान रही है, जो काकाजी ने हमेशा उनके चेहरे पर बख़्शिश दी है।

तो, हमें आज के इस मंगलमय अवसर पर एक ही चीज करनी है कि गुरुजी के जीवन का दर्शन करते रह कर सीखना है कि किस तरह से उन्होंने काकाजी को प्रसन्न किया है। अगर गुरुजी के पास जो 'मास्टर की' हैं, जैसे उन्होंने काकाजी की प्रसन्नता शत् प्रतिशत पा ली है, वो ही हम आत्मसात् कर लें और उसके लिए जैसे कि गुरुजी ने बताया है कि **सुबह उठते ही तीन मिनिट और रात को सोने से पहले पाँच मिनिट**–ये आठ मिनिट में हम सिर्फ एक ही बात का स्वाध्याय करें कि– किस तरह गुरुजी ने काकाजी को राजी कर लिया है ? किस तरह गुरुजी काकाजी के दिल में बैठ गए हैं ? किस तरह से गुरुजी ने काकाजी को अपने आप में सांगोपांग धारण कर लिया है ? सिर्फ यह करते रहेंगे, स्वाध्याय और भजन करके भगवान का बल मांगेंगे, तो हमारी साधना बिलकुल सरल हो जाएगी...

काकाजी ने जैसे प्रसंगों से गुरुजी को प्रसार किया है और गुरुजी की कसौटी की है, आज गुरुजी तो उसके हजारवें भाग के–लाखवें भाग की भी हमारी कसौटी नहीं कर रहे हैं। आज के इस मंगलमय अवसर पर अगर गुरुजी के जीवन के दर्शन करने के लिए हमें दृष्टि मिल जाए, ऐसी काकाजी एवं सभी गुणातीत पुरुषों के चरणों में हम प्रार्थना करते रहेंगे, तो मैं मानता हूँ कि हमारी साधना बिलकुल सरल हो जाएगी।

गुरुजी ने बहुत साधना और तपस्या करी है। उसी तपस्या के फलस्वरूप इस धरती पर–उत्तर भारत में शास्त्रीजी महाराज–योगीजी महाराज का संकल्प साकार होता जा रहा है।

...तो, **काकाजी कहां नहीं हैं ? काकाजी हम सब में तो व्याप्त हैं ही, लेकिन हर जगह–हर संकल्प में वो व्यापक स्वरुप से विराजमान हैं। गुरुजी उनको प्रगट कर सकते हैं। गुरुजी ने वो बात साकार करी है... भगवान के कृपा पात्र वे ही बन सकते हैं, जो उनके संकल्प को धारण करके उसको साकार करने में ही अपने समग्र जीवन को लगा देते हैं। गुरुजी ने वो काम किया है।** गुरुजी ने पूरा जीवन काकाजी की भक्ति में, काकाजी के संकल्प को साकार करने में लगा दिया है।

अगर हम गुरुजी के संकल्प को साकार करने में अपना पूरा जीवन लगा देंगे, तो हर तरह से– तन, मन, धन और आत्मा से सर्वांगी सुखी करने की जिम्मेदारी गुरुजी, काकाजी और सभी गुणातीत पुरुषों की है। उनकी कृपा-आशिष हम सब पर बनी रहे यही आज के मंगल अवसर पर प्रार्थना !

प.पू. वशीभाई

...जैसे, सब वक्ताओं ने बताया आज सचमुच महान दिन है। स्वामिनारायण भगवान का छपैया–नॉर्थ में प्रागट्य हुआ और गुजरात को कार्यभूमि के रूप में पसंद करके वहां 'स्वामिनारायण-स्वामिनारायण' कर दिया। **काकाजी ने** योगीजी महाराज के संकल्प से सत्संग को नॉर्थ में लाकर इस सत्संग का लाभ दिया इतना ही नहीं– लेकिन **यहाँ भी मुमुक्षुओं को ब्रह्मरुप होकर परब्रह्म की भक्ति में जोड़ने के लिए गुरुजी को यहाँ भेजा।**

महाराज के टाईम पर (जूनागढ़) किसी को भेजना था। तो वो टाईम पर हार्ड वॉटर, डिफीकल्टीज़ के कारण जूनागढ़ की परिस्थिति ऐसी थी कि कोई वहां जाने को तैयार नहीं था। लेकिन गुणातीतानंदस्वामी ने बोला कि महाराज मैं जाऊँगा। तो महाराज बहुत राजी हो गये थे। ऐसा काकाजी ने गुरुजी को खास आग्रह करके निमित्त बनाया और **गुरुजी आज तक वो काकाजी का विश्वास**–कि यह मुकुंद उत्तर में हमारा काम करेगा, वो **दिन प्रतिदिन बढ़ा कर लाईक अ फ्लावर ब्लौसम करते जा रहे हैं।** गुरुजी का जन्मदिन है तो उनकी जो विशिष्टता है, उनकी दो-तीन बातें मैं करता हूँ।

एक तो **गुरुजी बहुत क्रिएटिव हैं।** और... क्रिएटिवीटी ईज़ ब्लीस। क्रिएटिवीटी ऐसे नहीं आती है। ऐसी सोच आना ईज़ अ वैरी डिफीकल्ट थींग। जैसे काकाजी जोकर बारे जो बोलते–ऐसा कार्ड करना–वो गुरुजी हैं। जब काकाजी के साक्षात्कार की गोल्डन जुबीली थी, तब हम लोग कुछ गिफ्ट बनाने का सोचते थे। गुरुजी ने **पोस्टल स्टेम्प** की कैसी जबरदस्त चिरंजीव गिफ्ट दी ? वो भी कितना क्रिएटिव आईडिया ! ...वैसे ही **'स्वामिनारायण मार्ग -काकाजी लेन...!'** तो आई मिन– **ही ईज़ अ क्रिएटर औफ वन्डर्स।**

अभी वी आर लीवींग इन अ **टाईम ऑफ पीक परफोर्मन्स। ऐवरीटाईम यू हेव टू परफोर्म एट यौर बेस्ट। गुरुजी ऐसे हैं। ही ईज़ अ पीक परफौर्मर ऑल ध टाईम।** सत्संग में या ऐसे डेकोरेशन में भी क्रिएटिविटी दिखती है। यहाँ डेकोरेशन में यह राजहँस है, वो मोती का चारा चरता है। वैसे सत्संग में टेईक पौज़िटिव। हमें काकाजी का काम करना है– वो पौज़िटिव बात

ले करके मोती का चारा चरो– दूसरा छोड़ दो... ऐसी एक दूसरी स्पीरीच्यूअल क्रिएटिविटी यह कि– काकाजी को शास्त्रीजी महाराज ने जब कांतिकाका से जोड़ा, तो एक आत्मीयता से–जो कि आज स्वामिजी को बहुत पसंद है। यहाँ गुरुजी ने ऐसे फैमिलीझ तैयार किये हैं कि हरेक फैमिली को भगवान भजती एक-एक लड़की गोद दे दी। लड़की को उसके माँ-बाप मिल जाते हैं और जो कुटुंब है, उसे एक लड़की मिल जाती है। कितनी बड़ी, उच्च आध्यात्मिक भावना है ? और... उसका जो रहस्य है वो स्वामिनारायण भगवान ने वचनामृत में बताया है कि संत, गुरु और भगवान एवं भगवान के भक्तों में ऐसी आत्मबुद्धि और प्रीति हम कर सकेंगे तो अक्षरधाम की निर्विकल्प समाधि का सुख इसी जन्म में हमको मिलता जायेगा और... तीसरा बच्चा संभालना, वो भी कितना मुश्किल है ? आजकल आपका बेटा भी आपका मानेगा नहीं। लेकिन गुरुजी के प्रति कितना प्यार ? कितना प्रभाव ? कितना भजन ? कितना आंतरिक संबंध उन्होंने किया होगा कि हर एक फैमिली ने–जैसे लड़की को कुछ न कुछ देते हैं, ऐसा करके उन्होंने यह एडॉप्शन किया है ! तो **आध्यात्मिकता में भी - आनंद करते-करते भगवान भजने का जो काकाजी बोलते थे– वो बात गुरुजी ने प्रैक्टिकल लाईफ में बना के रख दी है।**

दूसरा **गुरुजी का एक जबरदस्त नेचर है– परसिवरन्स।** कोई भी काम वो हाथ में लेगा, तो उसको कम्पलीट किए बिना छोड़ेगा नहीं। यह स्टैम्प के बारे में देखो तो कितना मुश्किल था ? लेकिन सबके पीछे पड़ कर के सम्पन्न किया। मंदिर की जमीन का काम, यहाँ के भक्त लोग का काम ! **एक 'भक्त' तैयार करना बहुत मुश्किल है। एक मंदिर शायद बन जाता है, लेकिन एक सौफ्टवेयर-एक 'भगवान का भक्त' तैयार करना-एक आदमी को भगवान भजाना–एक संत को भगवान भजाना-उससे एक ब्रह्मांड को तारने का पुण्य मिलता है।** ये बच्चों को-सब लोगों को भगवान भजा कर **गुरुजी ने ऐसा किया है** और फिर भी गुरुजी, इसका सब क्रेडीट सबको देते हैं।

गुरुजी निर्दंभ हैं। कल कैझुअली उनका बर्थ-डे मना रहे थे। एक छोटा बच्चा 'जागृत' करके था, उसका भी बर्थ-डे था। गुरुजी दस मिनिट तक उसकी राह देखते रहे कि उसको बुलाओ, उसका भी बर्थ-डे है। उससे भी केक कटवाओ। सब बच्चों को बुलाया। जैसे अपना कोई जन्मदिन है ऐसा भाव ही नहीं। सहज उनका जन्मदिन करा लिया।

अभी मुझे बोल रहे थे कि हमारा सब काम काकाजी करते हैं। इतनी गर्मी पड़ती है। दिल्ली का माहौल मुश्किल है। फिर भी यह सब काकाजी ने ऐसा अरेंज कर दिया है। वर्ना तो मुझे यह गर्मी में विधाऊट ए.सी. रहना इज़ एन इमपौसिबीलिटी। उनकी बात **एकदम फ्रेंक है। जो बाहर है वो अंदर है, जो अंदर है वो बाहर है। छुपा-छापी नहीं है। एकदम ऑनेस्ट एन्ड क्रिस्टल क्लीयर लाईफ है। ट्रान्सपेरन्ट लाईफ है** और **आज का जमाना ही ट्रान्सपेरन्सी का है।** तो गुरुजी की यह एक और विशिष्टता है।

दूसरा–उनका आज 67वाँ बर्थ-डे तो है ही लेकिन योगीबापा और काकाजी को जो सुन्दराबाई हॉल में मिले, उसकी भी गोल्डन जुबीली है। वो 1954 में मिले थे। 54 से लेकर 04 की एक जबरदस्त यात्रा है। **पीपल से– बीहाईन्ड एवरी सक्सैसफुल मैन, धेयर इज़ अ वुमन। बट हियर आई सी–धेर आर लॉट ऑफ भक्ताझ।** और ऐसे-ऐसे भक्त हैं– नवीनभाई, वो यहाँ खड़े हैं–हमारे प्रभाकर राव, विनोदभाई, जनार्दनभाई, अपने वच्छराजजी–एक-एक ऐसे हैं कि जब भी गुरुजी को जो जरूरत पड़ी–खुद अपना बच्चा तक कि– **'गुरुजी आप रख लो, काकाजी का काम करने के लिए।'** गुरुजी को तो कोई स्वार्थ नहीं है। जीव को भगवान भजवाना है और काकाजी का काम करना है। तो उसमें जो इनका सपोर्ट है, इट्स अनइमैजिनेबल सपोर्ट। ये तो पुराने भक्त हैं - काकाजी के टाईम के, पर नए नए वो कौशिक जानी और रूपा भाभी–वे उनके ध्रुव को दे दे, वो तो कितनी हैरानी की बात है ? **गुरुजी ने कैसा पात्र क्रियेट किया होगा ? ऐसे भक्त क्रियेट करना, वो सबसे बड़ी बात है।** भक्त आ जावे कि चलो भई मंदिर में अच्छा खाना मिलता है, भजन होता है, अच्छे-अच्छे कोन्टेक्ट्स होते हैं-लेकिन वो छोड़कर, भक्ति के लिए, भजन के लिए आना, वो बहुत बड़ी चीज है।

अब लास्ट में–**गुरुजी भजनिक हैं।** आज उनका बर्थ-डे है... लेकिन आज सुबह में दो घंटा धून करी। पहले एक घन्टा धून करी, फिर कुछ काम में थे, फिर वापिस एक घन्टा–यूं दो घन्टा धून करी। कैसे भी प्रसंग आए–वो अमदावाद का प्रसंग या मंदिर का–भजन का इतना जोर है कि **भजन से भगवान को प्रार्थना करके कुछ भी काम खुद तो करवाते हैं, लेकिन भक्तों को भी सिखा देते हैं कि भजन का सहारा लो...**

दूसरी बात कि **वी आर ऑल लीवींग स्ट्रैसफुल लाईफ बीकौज़ ऑफ धी सरकमस्टान्सीस टूडे।** गुरुजी को तो जो भी भक्त हैं–वे स्ट्रैस देते हैं। लेकिन आप देखो तो गुरुजी इझ ऑलवेज़ फ्रैश, ऑलवेज़ स्माईलींग, ऑलवेज़ रैडी टू सर्व, रैडी टू गीव। तो वो जो भावना है, दूसरों के लिए जीना–वो बहुत-बहुत ऊँची भावना है, बहुत-बहुत ऊँची कक्षा है। इतनी-इतनी फीज़ीकल

प्रौब्लम्ज़—बाई पास भी उनका हुआ है, कितना प्रॉब्लम ! पर वो सब में शान्ति से—यहाँ तो ठीक, अमदावाद, पंजाब, जहाँ-जहाँ जाकर ऐसे भक्त तैयार करना, भक्तों को आगे लेना और उनके पास भी ऐसा काम कराना—**इट्स वैरी ईज़ी टू वर्क, ईट ईज़ वैरी डिफीकल्ट टू गैट धी वर्क।** तो **गुरुजी उसमें बहुत माहिर हैं।** आज उनके चरणों में प्रार्थना है कि जैसे आपने काकाजी की शोभा बढ़ाई है, काकाजी का काम किया है, ऐसे हम सब आपको, साहेबजी को, स्वामिजी को सबको साथ देकर ऐसे ही काकाजी का काम करें और खूब खूब आगे सब बढ़ें, ऐसी प्रार्थना है। सहजानंद स्वामी महाराज की जय।

पू. विकास मल्कानीजी

मुझे याद है जब हम लोग पहली बार इधर मंदिर में आए थे-अजय और मैं... डैड यहाँ पहले आते थे। गुरुजी से पहले-पहले वो मिले थे। और हमें—अजय और मुझे कोई इन्टरेस्ट नहीं था उस टाईम यहाँ आने का। कोई इच्छा नहीं थी। हम लोग सुबह तैयार होकर ऑफिस में जाते थे—काम पर, शाम को वापिस घर ! हमारी पूरी लाइफ सैट थी और यह भी पता था कि डैड कहीं जाते हैं। उनको एक मंदिर मिला हुआ है। एक गुरुजी हैं वहाँ और बार-बार डैड वहाँ जाते हैं। तो हम यह सोचते थे कि क्या होगा उनमें ? यह गुरुजी में क्या होगा कि बार-बार डैड वहाँ चले जाते हैं। एक दिन डैड ने बोला कि तुम लोग भी चलो मेरे साथ। तो हम लोग आए थे।

मुझे अभी भी याद है। मैं जब पहली दफा यहाँ आया और गुरुजी के साथ बैठा और उनके साथ खाना खाया, तो मुझे जो सारी 'स्वामिनारायण' की टीचींग्स हैं—उनकी कोई समझ नहीं थी। क्या करना है, क्या नहीं करना है, कौन-सी किताबें पढ़नी हैं, कैसे व्यवहार करना है, कुछ आईडिया नहीं था और कोई इन्टरेस्ट भी नहीं था। पर मुझे एक बात उसी टाईम-पहली मीटिंग में बहुत क्लीयरली समझ आ गई थी। **जब मैंने गुरुजी को देखा था तो एक बात मेरे माईन्ड में बैठ गई कि— यह अलग तरह का संत है।** हँसते—खेलते, भजन भी हो रहा है, हँसी भी चल रही है, मज़ा भी उठ रहा है लाईफ का ! **अगर प्रभु पे जाना है तो यही तरीका है।**

उस दिन से लेकर और आज तक हम लोग यहाँ आते रहे हैं। पहले-पहले जब मैं आया था तो एक ही कारण था आने का। एक तो गुरुजी बोलते थे कि तुम जब 'लन्च-ब्रेक' हो तो ऑफिस से आ जाया करो, खाना यहाँ खा लिया करो, फिर वापिस चले जाया करो। यह बहुत कन्विनियन्ट था-आसान था। ऑफिस में भी बैठकर लन्च करेंगे, उससे अच्छा है कि गुरुजी के साथ कर लें। मैं उस टाईम समझ नहीं पाया कि हम लोगों को अपने पास खींच लेने का यह एक गुरुजी का तरीका था। उस टाईम गुरुजी मुझे मूँग का सूप पिलाते थे। और यहाँ जो मूँग का सूप बनता था, वह बहुत पसँद आता था। हमने घर पर भी बड़ा ट्राई किया बनाने के लिए... पर, कभी भी सेईम नहीं बन पाया। जो यहाँ का टेस्ट था वो यहीं का टेस्ट था। तो पहले पहले जब आते थे गुरुजी के पास, तो हँसी मज़ाक करने। धून उन्होंने समझाई थी—कैसे करनी है। आज इतने साल हो गए, अब हम दूसरी चीजों के लिए आते हैं। खाना तो अभी भी खाते हैं, पर अब किसी और चीजों के लिए आते हैं। कुछ और पाने के लिए आते हैं।

आप लोग सब जो बैठे हुए हो, एक बात ध्यान से समझ लेना कि आप लोग भी जो यहाँ आते हो, सब कुछ न कुछ पाने के लिए आते हो। क्या पाने के लिए आते हो, वो तो आपको समझना है।

खाली खाना खाने आते हो,
खाली सुनने आते हो, सत्संग करने आते हो,
एक शाम अच्छी तरह से बिताने के लिए आते हो,
दोस्तों को मिलने के लिए आते हो
या
कुछ समझने आते हो, कुछ पाने आते हो।
प्रभु को पाने आते हो। क्या पाने आते हो ?

मैं एक छोटी-सी कहानी आपको बताता हूँ—दो मिनिट में। पुराने ज़माने में एक बहुत बड़ा गाँव था और गाँव में एक व्यापारी था जिसने कि अपने बिज़नेस में काफी फैमिलीज़ को रोजगारी दी थी। एक दिन इस बेचारे की बिज़नेस एकदम

डाऊन हो जाती है... तो इसके मन में जो पहला-पहला ख्याल आता है वो यह नहीं कि मैं क्या करूँगा ? ख्याल यह आता है कि मेरे पास जो सब लोग काम कर रहे हैं, उनका क्या होगा ? उनकी फैमिलीज़ का क्या होगा ? रात को बैठकर वह बहुत प्रार्थना करता है। प्रभु को बोलता है - हे प्रभु ! मेरे लिए नहीं, इतने हज़ारों लोग जो मेरे अंडर हैं-उनके भी बच्चे हैं, उनके लिए आप कुछ न कुछ उपाय मुझे बताओ। रात को उसको एक सपना आता है। सपने में प्रभु इसको बोलते हैं कि कल सुबह जब सूरज निकले, तो सूरज की पहली किरण के साथ तू गाँव के गेट पर पहुँच जाना। गाँव के द्वार पर जाकर रुकना। वहाँ से जो पहला आदमी गुजरेगा, उसके पास ही यह तेरा उपाय होगा। सुबह होती है, यह आदमी जग जाता है और सूरज की जैसे ही पहली किरण निकलती है, वह जाकर गाँव के द्वार पर रुकता है। देखता है कि एक भिखारी चलता आ रहा है। पहले तो वह भी सोच बैठता है कि यह भिखारी के पास मेरा उपाय ? मुझे तो लाखों रुपयों की जरूरत है, इसके पास क्या होगा ? पर, जब वो आदमी पास आता है तो देखता है—खाली भिखारी नहीं है— वह एक सूफी संत है। उसने एक झोली-सी ली हुई है साथ में और वो सूफीयों का चोला डाला हुआ है। वो उसके पास जाता है, बोलता है- हे महाराज ! मैं गाँव से आया हूँ, व्यापारी हूँ और रात को मुझे ऐसा एक सपना आया—प्रभु आये और बोले कि यह आदमी आयेगा। इसके पास तेरा उपाय है। यह मेरा प्रॉब्लम है।

तो संत कहता है-भई, मेरे पास तो कुछ है नहीं। मेरे पास ऐसी कोई चीज नहीं है जो तुम्हारा प्रॉब्लम सोल्व कर सके। तुम्हें तो लाखों की जरूरत है। पर तुम्हें प्रभु ने ऐसे दर्शन भी दिए हैं, तो प्रभु भी सही। खैर, मेरे पास यह एक चीज है, यह तुम्हें चाहिए तो ले लो। पूछता है यह - क्या है ? तो वो अँदर अपने झोले से एक पत्थर-सा निकालता है। कहता है अब देख इसकी कोई वैल्यू हो तो। व्यापारी उसको देखता है कि वो एक हीरा है। 'अनकट डायमण्ड' जो बोलते हैं। कहता है—आपको इसकी वैल्यू नहीं पता क्या ? यह तो मेरा पूरा प्रॉब्लम ही सौल्व कर डालेगा। मैं ले जाऊं यह ? सूफी बोलता है - हाँ, तुम ले जाओ। तुम्हें प्रभु ने दर्शन दिए हैं, तो यह सही बोला होगा। यह तुम्हारे लिए ही है, मेरे लिए नहीं है। तुम लेकर जाओ। व्यापारी सोचता है— मेरे सारे प्रॉब्लम हल हो गए।

पर, वह पूरी रात सो नहीं पाता। सोचता रहता है, सोचता रहता है, सोचता रहता है। अगले ही दिन, सुबह होते ही वो वापिस उस द्वार पर पहुँच जाता है। तो वो सूफी अभी भी वहाँ बैठा था। बोलता है - अब किसलिए आए हो ? अब तो मेरे पास कुछ नहीं है और देने को। जो था, मैंने तुमको दे दिया। अब मेरे पास और कुछ नहीं है।

उस टाईम वो व्यापारी बोलता है- नहीं महाराज ! अब मुझे यह आपको वापिस देना है। मुझे इस हीरे से भी ज़्यादा कुछ कीमती चीज आपसे लेनी है। तो वो संत कहता है कि क्या लेना है तुम्हें ? मेरे पास तो कुछ है ही नहीं। व्यापारी कहता है कि नहीं, इस हीरे से भी ज़्यादा कीमती चीज है— 'आपकी शक्ति'—जिसने कि आपको यह मुझ को देने के लिए ऐसे ही राजी कर लिया कि यह ले जा !

अब ज़्यादा मैं और कुछ नहीं बोलूँगा। हम लोग सब काफी सालों से यहाँ आते हैं। पर आज हमें यह ज़रूर सोचना चाहिए कि हम कुछ देने आए हैं या कुछ लेने आए हैं ? एक चीज याद रखो-कुछ पाने के लिए कुछ देना भी पड़ता है। बिना दिए हुए आदमी को कुछ मिलता नहीं है। पहली दफा जब यह आदमी आया था— कुछ लेने ही आया था। लेकर चला गया। दूसरी दफा जब आया तो कुछ और चीज— गहरी चीज—और कुछ कीमती चीज माँगने आया और उस टाईम वो देने को भी तैयार था... अब आप सब लोग यह सोचो कि आप यहां आए हो सिर्फ खाना खाने, सिर्फ एक शाम के लिए, अपनी ज़िंदगी बदलने या सचमुच गुरुजी को फॉलो करके भगवान को पाने ? सहजानंद स्वामी महाराज की जय।

प.पू. अध्यात्मानंदस्वामिजी

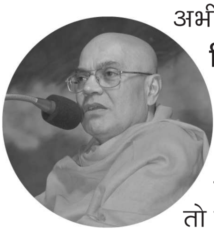

अभी हीरे की बात कह रहे थे। मुझे दिल्ली के एक बड़े औलिया की बात याद आ गई—**औलिया हज़रत निज़ामुद्दीन साहब** की। उनके पास एक बंदा आता था। आकर के बैठता था और कहता था- महाराज ! मेरी बेटी का निकाह करना है, कुछ सहाय कर दो। एक दिन, दो दिन, हफ्ता, महीना, पाँच-सात महीने चले गए तो वो बंदा तंग आ गया। महाराज के पाँव में पड़कर बोलने लगा—मेरे में और अब हिम्मत नहीं है बैठने की और आने की। मैं दूर रहता हूँ महाराज ! कुछ दे पाओ तो दो, नहीं तो मैं कोई और दूसरा उपाय ढूँढ लूँ। महाराज ने कहा-देख बेटे ! मेरे पास और कोई चीज नहीं है, मेरी

एक फटी जूतियाँ हैं। इसको चाहे तो तू ले जा। इसको छोड़ करके और कोई चीज मेरे पास नहीं है। कोई औलिये के पास आप चले भी जाओ और वो कुछ दे भी रहे हैं, तो मना भी कैसे करा जाए कि मैं फटी जूती का क्या करूँगा ? कह भी नहीं सकते। ले ली उन जूतियों को। सर में जो कपड़ा बाँधा था, उसमें बाँध करके वो चला गया। दूर उसका डेरा था। गाँव के बीच में एक जंगल पड़ता था। रस्ते में थका हुआ, हारा हुआ, वो सो गया। उस जंगल से एक सौदागर अपना सौदा लेकर आ रहा था और जो सौदागर सौदा लेकर आ रहा था, वो हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया का भक्त था। उसने कहा–

'यहीं रोक दे ये सौदा।' उसके पास 42 ऊँट भर कर हीरा, मोती, नीलम, जवाहरात थे।

'लगता है कि यहीं कहीं मेरे अपने मौला बैठे हुए हैं।'

लोगों ने जाकर देखा चारों ओर। कहा कि– मौला तो नहीं हैं, किन्तु एक बन्दा सो रहा है।

चलो, मेरे को ले चलो उसके पास।

देखा, बंदा चैन से सोया था। सोने दो जब तक नहीं जागेगा, हम बैठेंगे।

जब मुसाफिर जागा तो पूछा- कौन हो ? कहां से आए हो ?

तुम्हें पूछ कर क्या लाभ होगा ? मैं हज़रत निज़ामुद्दीन साहब के पास से आया हूँ।

ओ! उनके पास से आए हो ? कोई विशेष बात ?

मत पूछो यार। दुःखी हूँ। पाँच-सात महीने से चक्कर लगाता हूँ, मेरी बेटी का निकाह करना है। ख़्वाईश तो यही थी कि हज़रत साहब मुझे कुछ माल-मिल्कत ईनायत करते। अपनी बेटी का निकाह ठीक से कर पाता। किन्तु दुःख है–आज मैं इतना दुःखी हो करके आया। उन्होंने मुझे कुछ नहीं दिया। जब मैंने जबरदस्ती की तो उन्होंने अपनी फटी जूतियाँ दे दी।

हाँ ! उन्होंने अपनी जूतियाँ तुम्हें दे दी ? कहां है बताओ ?

उसने कपड़े में बँधी हुई जूतियों को दिखाया। सौदागर ने जूतियों को उठा करके जूतियों को सिर पे रखा। चूमा उसको। अपने दिल से लगाया। और बोला- बोल ! इसके बदले में तुझे क्या चाहिए ?

उसने कहा- महाराज ! मुझे क्या चाहिए ? अरे, तुमको चाहिए तो ले लो। मैं तो खुद सोच रहा था इसे कहाँ फेंकूँ। कहीं फेंक भी नहीं सकता। हज़रत निज़ामुद्दीन साहब की जूतियाँ हैं ! मेरे किस काम की हैं ? ले लो।

नहीं, तू बोल– क्या चाहता है ? हज़रत साहब के पास किस ख़्वाईश को लेकर गया था ?

महाराज, मेरी बेटी का निकाह करा दो-यही ?

मैं कराता हूँ। आ मेरे साथ में।

वो जो 42 ऊँट खड़े थे–जिस पर सोना था, हीरा था, मोती थे, नीलम थे, पन्ना थे। उसकी रस्सी इस मुसाफिर के हाथ में थमा दी–ले जा इसको।

जूतियों को लेकर सौदागर हज़रत साहब के पास में आया और बड़े ही सम्मान के साथ में उन जूतियों को उनके सामने रखा।

हज़रत साहब ने पूछा- **सौदा कितने में किया ?**

महाराज, कुछ नहीं था मेरे पास विशेष। बस, **40-42 ऊँट ही भरे थे–उन टुकड़ों के जो थोड़े कीमती होते हैं।**

हज़रत साहब ने कहा- **फिर भी सौदा सस्ते में पड़ा है...**

वो सौदागर एक जूतियों को सूंघ कर बता सकता था-जूतियों की खूशबू दूर तक अनुभव कर सकता था कि यह मेरे गुरु की जूती हैं।

काकाजी के नाम की हवा तक गुरुजी के कान खड़े कर देती है। आज मैं यहां गुरुजी की कोई सराहना नहीं करने आया। किन्तु गुरु के प्रति जिसने अपना जीवन न्यौछावर कर दिया है, ऐसी एक जलती मशाल, जलती रोशनी, एक प्रकाशस्तंभ–जो हमारे जैसे अनेक लोगों के जीवन में प्रकाश को दूर तक लेकर जाने के लिए सक्षम कर देते हैं, उस औलिया के चरणों की धूल लेने मैं आया हूँ। हर कोई आदमी अपना चेला-चाटा तो बना सकता है–कोई बड़ी बात नहीं है। साधु तो वो है कि जो आपको हरि के चरण में लगा दे। साधु तो वो है जो आपको हरिस्वरुप से मिला दे। साधु तो वो है जो आपको हरि के दिल में बिठा दें।

ये तीनों पवित्र कार्य की प्रयाग त्रिवेणी श्री गुरुजी के हृदय से बह रही है... आजकल रॉटरी का एक हेतु चल रहा है- **'लैन्ड अ हैन्ड'... 'लैन्ड अ हैन्ड' का एक प्रतीकमूर्त, एक दिव्य चेतना का स्वरूप पूज्य गुरुजी हैं।**

प.भ. मोहन बंसलजी

...कोई भी संत हैं, कोई भी महानुभाव हैं, उनका प्रागट्य ही होता है। तो गुरुजी का जन्मदिवस के बजाय मैं कहूँगा कि प्रागट्य दिवस है। आज अगर **भगवान भी किसी का सिमरण करता है, तो वो संतों का करता है क्योंकि उसको पता है कि भक्तों के दिल में वास करना है तो संतों के द्वारा ही किया जाएगा।** बिना माध्यम के तो कुछ हो नहीं सकता और एक यह कहावत है कि **'हद तजे सो औलिया और बेहद तजे सो पीर, हद- बेहद दोनों तजे—वो ही संत फकीर !'** तो सही माईने में हद और बेहद, दोनों जो हैं, उनको पार करके गुरुजी हम को भगवान को मिलाने का रस्ता दिखाते हैं और मैं तो यह कहता हूँ कि **प्रभु के विधान को अगर कोई बदल सकता है, तो वो सही माईने में संत है या फकीर हैं, वे ही बदल सकते** हैं और **गुरुजी उसके एक पूर्ण रूप से यहां उदाहरण हैं।**

श्री मांगेराम गर्गजी

'जननी जने तो भक्तजन, या दाता या सूर-नहीं तो जननी बाँझ रहे, काहे गँवाए नूर।' यह हमारी जगत जननी माँ ने हमें ऐसे-ऐसे सपूत दिए हैं... और जब-जब भी संतों का प्रागट्य हुआ है—उनका प्रागट्य अपने लिए नहीं, समाज के लिए हुआ है, समाज उत्थान के लिए हुआ है, देश का गौरव बढ़ाने के लिए हुआ है। आज 67वें प्रागट्य दिवस के अवसर पर मैं कहना चाहूँगा कि काकाजी के आशीर्वाद से स्वामिनारायण मंदिर आज पूरे देश में, पूरे विश्व के अंदर भारत की संस्कृति को जन-जन तक पहुँचाने में सक्षम रहा है। परम पूज्य गुरुजी का मुझे वक्त-वक्त पर आशीर्वाद मिलता रहा है। **मेरा इस क्षेत्र से एक जन प्रतिनिधि के रूप में निर्वाचन हुआ है, वो सारा का सारा श्रेय निश्चित रूप से मैं परम पूज्य गुरुजी के श्रीचरणों में अर्पित करता हूँ** और मेरे योग्य जो-जो भी आदेश समाज के प्रति आपका रहेगा, मैं उसे पालन करने में सक्षम होऊँ, वह भी आपके आशीर्वाद से ही संभव हो सकेगा। बार-बार मुझे आपके श्रीचरणों में आकर सम्मान मिलता है। पता नहीं मैं उसका पात्र हूँ या नहीं हूँ, परंतु मुझे मिल रहा है। सदैव ऐसा ही आपका आशीर्वाद मुझे मिलता रहेगा। बहुत-बहुत धन्यवाद ! जय श्री राम।

प.पू. साहेब

...बहुत आनंद है कि आज गुरुजी का प्रागट्य पर्व पर हम सब पूज्य स्वामिजी, गुरुजी, संतों का आशीर्वाद—दर्शन के लिए आए हैं... माहात्मय का गान हुआ, सुनकर बहुत आनंद आया। और राकेशभाई ने तो दो भजन सुना कर काकाजी और गुरुजी की महिमा में हम सबको डूबो दिये। राकेशभाई ! बहुत अच्छा भजन बना है हं ! उनके गाने की झलक भी बहुत अच्छी है। वर्ना, भजन अच्छा हो, पर गाने वाला अच्छा नहीं हो तो हमें समझ में नहीं आता और आनंद भी नहीं आता। **गुरुजी—बहुत बड़ी भेंट हमे मिली है।** सबने बहुत अच्छी तरह से बताया।

आज एक सतयुग का माहौल चल रहा है। स्वामिनारायण भगवान जो संकल्प लेकर आये थे और उन्होंने वरदान दिया था कि साधु द्वारा मैं पृथ्वी पर अखंड रहूँगा। लेकिन आज तक ऐसा होता था कि हमारे सामने भगवान प्रगट होते थे, उनकी पहचान हम नहीं कर पाते थे। रामचंद्र भगवान आए, पहचान नहीं सके; कृष्ण भगवान आए, पहचान नहीं सके। स्वामिनारायण भगवान की विशेषता यह कि उन्होंने ऐसा संकल्प किया कि ऐसे साधु की हम सबको पहचान हो। उनके संकल्प से और पूर्वजन्म के प्रभु के संबंध से हम ऐसे साधु के योग में आए और उनके साथ हमको जोड़ दिया—हेत हो गया, प्रेम हो गया। सो, **उनकी जो बात है—हम मानते हैं, उनकी जो आज्ञा है—वो हम पालते हैं। इससे हमारे जीवन में उनका**

माहात्मय बढ़ता जाता है। इस तरह से **माहात्मय बढ़ने से उनमें निर्दोषभाव–दिव्यभाव बढ़ता है। तो हमारे भीतर का जो अहंकार है, वो** धीरे-धीरे–आहिस्ता-आहिस्ता **कम होने लगता है। हम भीतर से शान्ति, आनंद और सुख के भोक्ता बनते हैं। यह बात बहुत सहज रूप में-आनंद रूप में स्वामिनारायण भगवान ने ऐसे साधु द्वारा हमारे जीवन में डाली।** भगवान की बहुत-बहुत कृपा।

वशीभाई ने बताया कि छपैया में महाराज प्रगट हुए और गुजरात में गए–स्वामिनारायण भगवान की बात सुनाने के लिए; काकाजी की आज्ञा से गुरुजी गुजरात से इधर आए। हम सबने देखा है, इतनी कठिनाई- इधर कोई मानने वाला नहीं, जानने वाला नहीं, स्वामिनारायण का नाम किसी ने सुना भी नहीं था–ऐसे माहौल में काम करना बहुत कठिन था... 'साधु समाज' की बिल्डींग में नंदाजी की सिफ़ारिश से ठहरे थे... लेकिन गुरुजी ने काकाजी की आज्ञा जो मानी, **काकाजी ने उनको यहां भेजा, तो उनके साथ भगवान भी आते हैं।** काकाजी योगीजी महाराज के बहुत कृपावान थे, योगीरूप बने हुए थे। उन्होंने गुरुजी को भेजे तो उनके साथ उनकी शक्ति भी काम करने आई और हम देखते हैं, थोड़े साल में कितना अच्छा काम हो रहा है।

ऐसे साधु को पहचाना और उनका माहात्मय हुआ, वो बड़ा काम हो गया। पहले ऐसे नहीं होता था। दादुकाका को हम इसलिए याद करते हैं। योगीजी महाराज जब थे तब उनको पहचानने वाले कम लोग थे। सब की सेवा योगीजी महाराज करते। सबको खाना खिलाते, सबको चाय पिलाते, सब के बिस्तर लगा देते, सबको मच्छरदानी दे देते, सबकी रूम खोल कर रूम की साफ-सफाई करके उनको वहां बिठा देते। यह योगीजी महाराज सब की सेवा करते। काका ने बहुत- बहुत-बहुत कृपा की है हम पर। **दादुकाका को जब रीएलाईज़ेशन हुआ '52 में, तब उन्होंने बताया कि योगीजी महाराज सामान्य साधु नहीं हैं। उनकी सेवा हमको करनी है। वो हमारी सेवा करें–उल्टी गंगा चल रही है।** और काका ने बताया कि उनका दर्शन करने से हमारी आँख का पाप चला जाता है, उनकी बात सुनने से, उनकी बात मानने से हमारा देह का भाव चला जाता है। तो **उनकी सेवा करने से हमको आत्मा में बल मिलता है। यह तो उल्टा हो रहा है। सब की सेवा बापा करते हैं। बापा सामान्य साधु नहीं हैं। वो स्वयं प्रभु के स्वरूप हैं। जब काकाजी ने यह बात जोर-शोर से की, तब से पूरा माहौल बदल गया। योगीजी महाराज को समझने, योगीजी महाराज की आज्ञा के लिए सब तत्पर बने। तब से गुणातीत समाज की स्थापना हुई।**

गुणातीत समाज में त्रण गुण के भाव से उठने की साधना हो रही है। वो तब होता है, जब ऐसे गुणातीत साधु की पहचान हो तब। तो, दिल्ली वासियों का सच में बहुत अभिनंदन करता हूँ, कि– गुरुजी का माहात्मय है। अभी गुरुजी के साथ सौ से ऊपर लोग आए थे गुजरात में। सारे दिन वहाँ रहे। उनकी चहल-पहल देखी-गुरुजी के प्रति उनका भाव देखा। इतना आनंद हुआ कि **साधु के प्रति इतना भाव होने से ही हमारा कल्याण होता है।** साधु के आस-पास घूमने से, साधु के दर्शन से हमारे भीतर के भाव का परिवर्तन होता है। मैं कल से आया हूँ। हमारे विजयपालजी के यहाँ मुझे रहना हुआ है। ऐसे साधु के पास आने से जो विकास भाई ने बोला कि हमको कुछ मिलता है। वो क्या मिलता है? तो हमारे जीवन का पूरा माहौल बदल जाता है। पहले के टाईम पर ऐसा था– हमारे गुजरातीयों में कहावत थी- **'भगत ना बार सांधे ने तेर तूटे।'** मालूम पड़ा ? भक्त का बारह काम हो जाए और तेरह काम बिगड़ जाए। क्या माल ? भक्त भक्ति करते रहते हैं और घर में बिल्ली-कुत्ता सब चक्कर लगाते रहते हैं। **भगवान की भक्ति करने से तो हमारे भीतर और बाहर आनंद होना चाहिए।** घर स्वच्छ होना चाहिए, जिससे सबको मालूम हो कि उसने कुछ पाया है। हम हरिभक्तों के घर पर जाते हैं तो मिलती है– उनके घर की सुवास ! मैं आज यह विजयपाल के घर पर गया, हरेक रूम में मूर्ति ! इतना साफ सुथरा घर ! वो दोनों में इतना भाव ! हम तो अनजाने हैं, पहली दफा आए-गुजरात से आए। लेकिन गुरुजी की आज्ञा से वो सेवा कर रहे हैं–प्रभु की प्रसन्नता के लिए भक्तों की जो सेवा करते हैं, तो निर्दोषभाव अपने आप प्रगट हो जाता है। दादुकाका बोलते थे कि **निर्दोषभाव ही सच्ची सेवा है। वो निर्दोषभाव रहेगा कैसे? प्रभु के भक्तों में प्रभु का भाव लाकर उनके दर्शन करो, उनके साथ मिलो, उनकी सेवा करो।** वो भक्त कुछ भी करें। घर में कोई भक्त आए, आप उनको पानी दो, वो गिरा दे, कुछ टूट-

फूट जाए और आपको लगे कि कैसे लोग आए ? हमारे घर में तोड़-फोड़ दिया, बिगाड़ दिया। तो आप 'व्यक्ति' की सेवा करते हैं। **'भक्त' की सेवा हम प्रभु की प्रसन्नता के लिए करते हैं, तो वो जो भी करें, हमें भगवान को प्रसन्न करना है। उनके प्रति मेरा भाव नहीं बदलना चाहिए। ऐसे भाव से सेवा करने वाले गृहस्थ भी—सब कुछ हो-संसार है, लड़के हैं, नौकरी है, धंधा है, गाड़ी-वजीफा सब कुछ है, तो भी वह 'साधु' बन जाएगा। साधु मीन्स आसक्ति रहित जीवन ! साधु मीन्स ज़ीरोनेस** ! हम ज़ीरो पर आ जाएंगे, **अहंकार रहित बन जाएंगे।** सूफी संत की तरह करना फ़कीरी, फिर क्या दिलगीरी ? दिल में प्रभु का ही सदा वास होता है। तो, ऐसी साधुता गृहस्थी और त्यागी दोनों में सुलभ है, यदि ऐसे साधु मिल जाएं तो। बाकी संसार छोड़ो, हिमालय पर जाओ, धरती में डटे रहो— पर साधुता नहीं आएगी। **साधु के बिना साधुता आती नहीं है।**

ऐसा साधु गुरुजी के रूप में हमें मिले हैं। गुरुजी का पूरा जीवन हम सब को मालूम है। योगीजी महाराज की उन्होंने आज्ञा पाली। उनको साधु नहीं होना था, पर बापा ने बोला साधु बन जाओ ! काका, पप्पा और बा ने माहात्मय गाया था, तो बन गए। उनको भीतर से नहीं होना था, लेकिन योगीजी महाराज की आज्ञा पाली और काकाजी की आज्ञा से दिल्ली आ गए। ऐसी कई आज्ञा हैं जो उनकी बुद्धि में नहीं आती थी, लेकिन प्रभु से इतना प्रेम था-उनको राजी करने का इतना भाव था—इसलिए वे आज्ञा पालते रहे। तो—

गुरुजी-गुरुजी नहीं रहे, हमारे लिए योगी रूप-काका रूप और प्रभु रूप बन गए ! गुरुजी की आज्ञा ऐसे भाव से हम पालेंगे, उसका दर्शन इस भाव से हम करेंगे, उनके साथ इस भाव से रहेंगे, तो हम भी गुरुजी रूप हो जाएंगे। इसमें कोई कठिनाई नहीं पड़ेगी। **कठिनाई तब होती है, जब आपस के संप, सुहृद्‌भाव में खटपट करते हैं।**

स्वामिनारायण भगवान ने यह एक ही बात बताई है। गुणातीतानंदस्वामी और योगीजी महाराज कहते थे कि किसी का दोष देखो मत ! किसी की निंदा सुनो मत ! किसी के लिए गलत मत बोलो ! यदि भक्त इतनी बात का ध्यान—इतनी जाग्रतता से रखेंगे और गुरुजी के वचन से, उनकी आज्ञा से जो सेवा, भजन-प्रार्थना करते रहेंगे— तो जहां भी हैं, कितनी भी झंझट हो-परेशानी हो-उसकी फ़िकर मत करो, टेन्शन फ्री लाईफ बन जाएगी और आसक्ति रहित हमारा जीवन बन जाएगा। इसी देह में अक्षरधाम का सुख, शांति, आनंद का भोक्ता बन जाएंगे। कितनी सुलभ बात ?

गुरुजी की भेंट प्राप्त करके भगवान का ऋण हम कैसे अदा कर सकेंगे ? नहीं कर सकेंगे। हम ने किसी ने तपस्या करी ? ये लोग सब बैठें हैं दिल्ली वाले—किसी ने तपस्या करी है क्या ? एक पैर पर खड़े होकर प्रार्थना करी है क्या ? व्रत किया है क्या ? कुछ नहीं किया। तो भी भगवान ने हम पर प्रसन्न होकर ये गुरुजी की भेंट दी है। तो, **उन्हें जतन करके संभालना, वही भगवान की श्रेष्ठ भक्ति। मीन्स उनकी आज्ञा में रहना, उनको मोहताज़ नहीं करना।** भक्तजन आपस में हिल-मिल कर एक साथ, मिलजुल कर काम करेंगे तो गुरुजी भीतर से प्रसन्न होंगे। उनके द्वारा प्रभु प्रसन्न होंगे। वो प्रभु में जोड़ते हैं। प्रसन्न होंगे तो प्रभु देंगे और जब हम प्रभु रूप हो जाएंगे, ऐसा पूरा आनंद आ जाएगा कि हम सोच नहीं सकते। इतनी सुख, शांति में हम चले जाएंगे। ऐसा मौका हमको मिला है—दिल्ली में रहते हुए मिला है। ऐसे गुरुजी के सान्निध्य में यह होगा।

तो गुरुजी को मैं प्रार्थना करता हूँ कि प्रभु ने—काकाजी ने आपको यहां भेजा है—आपको साधु को तो कुछ देश, बॉर्डरलेस है जीवन ! जो **उनसे भाव से बोलता है, मिलता है—चाहे गुजरात में है, उत्तर प्रदेश में है, उनका है। उनके साथ रहने वाला भी भाव नहीं रखता, तो उनका नहीं है।** तो, हम ऐसे जाग्रतता से उनका सेवन करें और प्रार्थना करते हैं कि उनकी तबियत बहुत अच्छी रहे। बरसों तक ऐसा दर्शन, सेवा, समागम का हमें लाभ मिलता रहे और गुरुजी से प्रार्थना कि सब पर प्रसन्न होकर ऐसे आशीर्वाद दें कि स्वामिनारायण भगवान ने खुद कृपा करके जब ऐसे आपके, स्वामिजी, काकाजी, पप्पाजी सब संतों की भेंट दी है, तो उनके साथ हम आवरण रहित—काकाजी जो बोलते थे—ऐसा हमारा जीवन बना रहे। उनकी प्रसन्नता के पात्र हम बने रहें। उनसे जुड़ने में बीच में जो कुछ है, वो प्रभु हमारा निकाल कर भी प्रभु रूप बना दें और सब को तन, मन, धन और आत्मा से खूब-खूब सुखी करें, ऐसे आज आपके प्रागट्य पर्व पर आशीर्वाद बरसाना ! यही हम सब की प्रार्थना है— सब को जय स्वामिनारायण !

प.पू. स्वामिजी को बीच वाले सोफे पर बैठने आग्रह करते प.पू. गुरुजी...

'यह भावना खाली हार बनाने में ना रहे... उस रास्ते हम सब अग्रसर हों' ! — प.पू. गुरुजी

दिल के आकार का कार्ड अर्पण करते मंदिर के सेवक !

प.पू. अध्यात्मानंदस्वामिजी के साथ प.पू. गुरुजी।

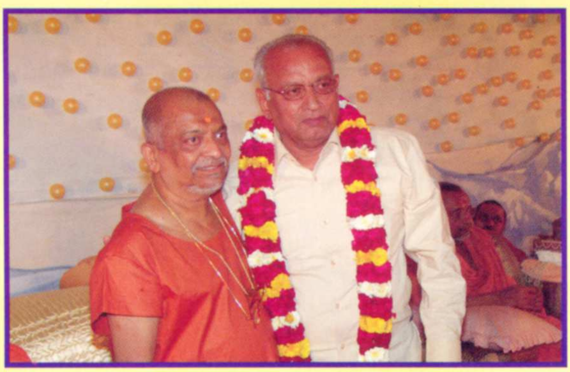

प.पू. गुरुजी - प.भ. राजुभाई परीख।

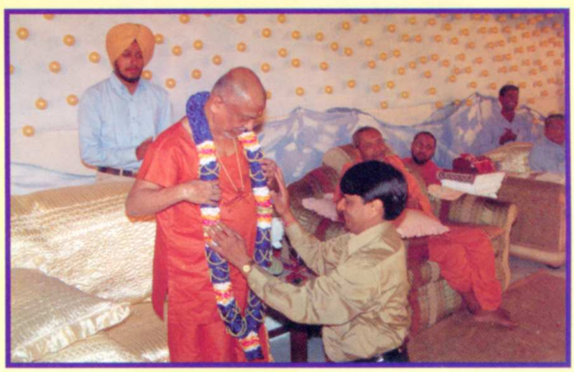

'आपके साथ के हमारे संबंध में ज्वार - भाटा ना आए...'

— प.भ. ओ.पी. अग्रवालजी

गुरुजी का संबंध जो काकाजी ने दिया है,

मोती के मेह बरसे ऐसा मौका बख्शा है...

गुणातीत समाज की जय

प.पू. काकाजी की 67 मूर्तियों वाला हार ग्रहण करते
प.पू. साहेब !

महिमा गाया करने के बजाय
क्या हम सच में माहात्मय में डूबे रहते हैं ?

अपने प्रिय सखा प.पू. वशीभाई के साथ प.पू. गुरुजी !

प.पू. गुरुजी की 67वीं जन्म जयंती के उत्सव पर
दर्शन करतीं प.पू. दीदी व अन्य बहनें।

उत्सव का दर्शन करता समुदाय...

1000 - 1200 हरिभक्तों का समूह...
मानो घर - घर की सभा हो... — प.पू. स्वामिजी

प.पू हरिप्रसादस्वामिजी

...गुरुजी के प्रागट्य दिन के हर उत्सव में राकेशभाई और संगीत मंडली ने बहुत अद्भुत आनंद करवाया है। आज जो हम कीर्तन सुनते थे–लास्ट ईयर भी जब सुनते थे, हृदय में ऐसा महसूस होता है कि **गुरुभक्ति का बेनमून, ऐसा एक दिव्य मुक्तों का सर्जन दिल्ली की धरती पर काकाजी के संकल्प से हुआ है।** दिल्ली मंदिर में कई सालों से मैं कीर्तन सुनता हूँ। गुरुजी के प्रति की भक्ति-प्रीति का दर्शन, संबंध देख के मुझे निरंतर बहुत खुशी रहती है। आपको मालूम है–मैं बहुत घूमता हूँ। हरिधाम में भी संगीत मंडली है, न्यूयोर्क में भी है, डलास में भी है, ह्युस्टन में भी है, मगर वहाँ आप लोग एकदम याद आ जाते हो। गुरुजी की ओर जो यह अनेरी-अनुपम भक्ति का दर्शन मैं सारी दुनिया में घूमते हुए भी करता रहता हूँ।

मोस्ट इम्पोर्टेन्ट बात, यही बतलाने की इच्छा है कि बर्थ-डे सैलीब्रेशन **कार्ड** का बहुत अद्भुत दर्शन हुआ। **भगवान स्वामिनारायण ने अपनी पाघ गुणातीतानंदस्वामी के सिर पर रख दी। भगवान स्वामिनारायण का यही संकेत था–मेरी पाघ मिन्स मैं, वो मेरा स्वरूप है।** सामने एक अद्भुत दर्शन-**काकाजी ने अपना कोट निकाल कर गुरुजी को पहना दिया। काकाजी कहना चाहते थे–गुरुजी मेरा शरीर है। काकाजी अक्षरपुरुषोत्तम सनातन पुरुषों का स्वरूप। काकाजी का शरीर अक्षरब्रह्म– काकाजी का शरीर अक्षरतनु का। एक दूसरी रीत से काकाजी के कहने की भावना यही है, गुरुजी ही मेरा शरीर है। मीन्स गुरुजी अक्षरस्वरूप है। कितनी अद्भुत बात ! कितना अद्भुत संकेत !**

यहां की पत्रिका जब हर महिने मिलती है, मैं वह ट्वाईस– दफे पढ़ता हूँ। यह फेस्टीवल की-यह महीने की पत्रिका मेरे हाथ में आई। बहुत अद्भुत वर्णन गुरुजी का शुरुआत में ही किया। **गुरुजी का एक सुंदर दर्शन** मैंने वो **पत्रिका में** से किया। **दिमाग़ और दिल का समन्वय** ! मुझे इतनी खुशी हुई।

हम लोगों ने **गुरुजी** को पहले बहुत देखे हैं। **प्रचंड बुद्धि ! बुद्धि से देखना उसका स्वभाव था।** सीरीज़ ऑफ इन्सीडेन्सीस वी हैव ओब्ज़र्व्ड। चाहे कैसा भी प्रसंग बने, मगर वो सिर्फ बुद्धि के एंगल से दर्शन किया करता था। मैं दिल से आपको कहता हूँ–काकाजी का आशीर्वाद के फलस्वरूप धीरे, धीरे, धीरे, धीरे, यह बुद्धि कहाँ गई–आत्मा से बुद्धि कहाँ हट गई, मुझे भी मालूम नहीं पड़ा–मैं दिल से कहता हूँ। आज गुरुजी का जो दिल देखें–मुझे इतना आनंद होता है–इतना आनंद ! कल मैंने रात्रि को फोन किया। गुरुजी ने मुझे कहा कि सुबह में आने की इच्छा रखता हूँ। मेरे को इतना आनंद आ गया। फिर मैंने गुरुजी को कहा कि– नहीं आना, मैं मसाज करा लूं। तीन-चार सालों से मैं गुरुजी को निरंतर ओब्ज़र्व करता रहता हूँ। सारी पत्रिका भी अगर पढ़ो तो मालूम पड़ जाए कि गुरुजी का अंतरतम टोटल चेईन्ज हो गया है। फर्स्ट बुद्धि का ही डॉमिनेशन था। कई सालों तक हमने देखा है। हम साथ ही रहे, मगर पिछले कुछ सालों से **गुरुजी का हृदय में–काकाजी के संकल्प से ब्रह्मभाव-ब्रह्मतनु-पराभक्ति बहती ही रहती है-बहती ही रहती है। ऐसा एक प्रभाव निरंतर दिखाई पड़ता है।**

तो आज, ज़्यादा और कुछ कहना नहीं है। एक बात करनी है। गुरुजी हम सब को मैसेज देते हैं–

भगवान के स्वरूप के चार लक्षण हैं। गढ़डा प्रथम 37- सदा दिव्य साकार स्वरूप, प्रभु दिव्य–प्रभु का संबंध वाला दिव्य। दूसरा एक मैसेज प्रभु देता है, प्रभु ही कर्ता-हर्ता हैं। गढ़डा प्रथम 27,37 गढ़डा फर्स्ट सैक्शन, 65 गढ़डा- फर्स्ट सैक्शन। 65 वचनामृत में भगवान स्वामिनारायण ने कहा– इच्छा शक्ति, क्रिया शक्ति, ज्ञान शक्ति-मेरे एक के आधीन। मेरी इच्छा से आप निंद्रा में से जाग्रत होते हो, मेरे संकल्प से आप क्रिया कर सकते हो और मेरे संकल्प से आपको सब प्रकार की जानकारी आती है।

मानव जीवन में प्रसंग अवश्य बनने वाला ही है। हर एक व्यक्ति प्रसंग में जीती है। हर एक परिवार में प्रसंग बनने वाले ही हैं। मगर गुरुजी के सामने अगर हम दृष्टिपात करें–निरंतर निगाह रखें, हम सबको बल मिल जाएगा।

दो चीज करने की है। प्रसंग बने, काकाजी अंनत प्रसंगों में हँसते ही रहे–हँसते ही रहे। फिर– काकाजी भजन करते ही रहे, करते ही रहे, करते ही रहे। **गुरुजी का भी कई सालों से काकाजी को राजी करने के लिए वो ही भजन-स्वाध्याय**

है। प्रसंग होने वाला ही है, प्रसंग की चोट लगने वाली ही है। व्हेयर धेयर ईज़ ईगो, धेयर विल भी ध ग्रेटेस्ट डीस्टर्बन्स विधीन। जहाँ अहंकार है, जहाँ अपनी मानीनता-सत्य के मुताबिक जीने की भावना है, जहाँ सरलता नहीं है, जहाँ स्वीकार नहीं है, वहाँ प्रसंग की चोट लगने वाली ही है। प्रभु का एक ही स्वभाव है- आपकी इन्द्रियाँ पौज़िटिव बनें। प्रभु का एक ही स्वभाव है- आपकी आत्मा पर, मन-बुद्धि पर सीधा वार ! अहंकार का जो स्वभाव है, हठ-मान-ईर्ष्या का जो प्रभाव है–जब तक वो प्रभाव है, तब तक वो डीस्टर्बन्स होने वाला ही है। हम लोग भजन भी नहीं कर सकेंगे। वो ऐडेमैन्ट नेचर, वो जैलस नेचर, वो इगोइस्टिक साईन्स–इसको निकालने के लिए प्रभु कृपा करके प्रसंग खड़ा करते हैं। उसी समय अहंकार को चोट लगने वाली ही है। उसी समय हम **प्रभु को कर्ता-हर्ता मान कर सिर्फ भगवान का भजन करें–गुरुजी जैसे संत का ध्यान करें, तो कोटि कल्प में भी जो जेलेसी टलने वाली नहीं है–एडेमेन्ड नॅचर जो निकलने वाला नहीं है–इगोइस्टिक साईन्स जो निकलने वाली नही हैं, वो यदि हम कर्ता-हर्तापन मान कर भजन करेंगें तो–जीवन हल्का फूल** !

मैंने गुरुजी को कहा– आपको बीच में बैठना चाहिए। ये प्रसंग ऐसा है–सेलिब्रेशन का प्रसंग ऐसा है। सिर्फ आपको ही यहां बैठना चाहिए। गुरुजी ने मुझे बहुत समझाया। गुरुजी का दिल इतनी भक्ति से भरा था, वह देख कर मैं बीच में बैठ गया। फिर से मैंने गुरुजी को कहा, पर वो सच्चा दिल, सच्चा भक्ति का वो प्रभाव, सच्ची महिमा का वो दर्शन, सच्चा काकाजी के साथ का वो संबंध–वो देख कर मैं बैठ गया !

तो, दिल्ली वाले जो यहां बैठे हो। दिल्ली के ये सत्संग समाज के सभी हरिभक्तों को एक ही बात कहनी है– गुरुजी व काकाजी की ओर प्रीति और काकाजी को कर्ता-हर्ता मान कर भजन ! गुरुजी की ओर नज़र रख कर स्वाध्याय-भजन करते रहोगे, तो–जो जेलस नॅचर, एडमेन्ड नॅचर–वो कहाँ-कब चला जाएगा, आपको मालूम नहीं चलेगा। खूब ध्यान की बात–गुरुजी की ओर नज़र रखना। गुरुजी के जीवन में बहुत प्रसंग बने, आपको कहते ही रहते होंगे। ऐसे प्रसंग (जब) अपने बनें, तो इस प्रकार से अवश्य भजन–स्वाध्याय करना !

कोटि-कोटि धन्यवाद भगवान स्वामिनारायण को ! वो अद्‌भुत पुरुष पृथ्वी पर आया, वो पुरुष ने अद्‌भुत आशीर्वाद दिए ! कीर्ति, कांचन और कामिनी का रस न हो, ऐसा पवित्र संत ये पृथ्वी पर अखंडित हुआ। भगवान ने अद्‌भुत आशीर्वाद दिए ! हम पर बहुत अद्‌भुत कृपा बरस गई ! काम से भयंकर लोभ है और लोभ से भयंकर कीर्ति–मान है... व्यक्ति की कोई ताकत नहीं है कि अपने स्वपुरुषप्रयत्न से वृत्तियाँ चली जाए। आज का संसार कितना खराब हो गया है ? आज का दिल्ली कितना बिगड़ गया है ? सतयुग जैसी कोई चीज रही नहीं है। मर्यादाएं खत्म हो गई हैं। ऐसी कलियुग की परिस्थिति में आप लोगों को कोटि-कोटि धन्यवाद ! गुरुजी की निश्रा में बैठ कर सतयुग में जीवन जी रहे हो। मैंने अभी बतलाया– काम तो भयंकर है ही। उससे ज्यादा बदतर है लोभ, इससे ज्यादा कोटि बदतर है मान–हठ, मान, ईर्ष्या ! परंतु, भगवान स्वामिनारायण और गुणातीत पुरुषों की कृपा के फलस्वरूप जो प्रचंड राक्षसी वृत्तियाँ हैं, वो कब निकल जाएंगी मालूम नहीं पड़ेगा। एक ही भावना रखना– सिर्फ आप प्रसन्न हो जाओ बस !

आज जब बर्थ-डे सेलिब्रेशन गुरुजी का मना रहे हैं, तो ऐसी प्रकार की भावना से जीवन जीने का दृढ़ संकल्प– गुरुभक्ति और प्रभुभक्ति के लिए करना चाहिए। मेरे जीवन में आपका ही प्रथम स्थान रहे और प्रसंग बनने वाला ही है– तब कर्ता-हर्ता मान कर, स्थिर होकर, तटस्थ होकर मैं किसी के अभाव में नहीं जाऊं और भजन करुं और स्वाध्याय करुं ऐसी भावना से आज संकल्प करना। आज के शुभ मंगलकारी दिन भगवान कृष्ण, भगवान राम, भगवान शिवशक्ति, भगवान स्वामिनारायण, शास्त्रीजी महाराज, योगीजी महाराज, काकाजी, पप्पाजी, साहेब, स्वामिजी, गुरुजी सब के चरणार्विंद में एक ही प्रार्थना है–बहुत अद्‌भुत घोर कलियुग में बैठे हुए हैं, आप लोग सतयुग में बैठे हुए हो–तो, सब गुणातीत पुरुषों को मैं प्रार्थना करता हूँ कि–

आपका संबंध बढ़ता जाए, आपका भजन और स्वाध्याय बढ़ता जाए, आप भी कम समय में सुखी हो जाओ ऐसी प्रार्थना– प्रभुचरणे–गुरुचरणे आपके लिए करता हूँ। सहजानंदस्वामी महाराज की जय !

प.पू. गुरुजी

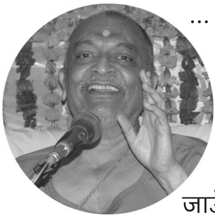

... सबसे पहले तो मैं **साहेब और स्वामिजी को खास प्रार्थना** करता हूँ कि आप साल में कभी आओ न आओ, लेकिन **मेरे जन्मदिन पर जरूर आया करना; ना कि मेरा जन्मदिन धामधूम से मनाना है इसलिए, लेकिन आपके होने से मुझे एक हूँफ (हिम्मत) रहती है।** 1986 से 2000 तक तकरीबन रेग्युलर पप्पाजी आते रहे... एक भी साल मिस नहीं हुआ। लेकिन पप्पाजी के स्वास्थ्य को देखते हुए मैंने ही कहा कि– पप्पाजी अब आप नहीं आना, मैं हर साल मार्च में एक बार आपके दर्शन करके जाऊँगा– आशीर्वाद लेकर जाऊँगा। इसलिए **स्वामिजी और साहेब होते हैं तो मुझे ऐसा रहता है कि मेरे पीछे कोई है।**

दूसरी बात– मैं जब ये प्रवचन वगैरह सुन रहा था, तब मुझे एक विचार आता था कि काकाजी होते तो बोलते कि– भाटईवेड़ा (नौटंकी) छोड़ो। **एक ट्रेडिशन बन गई है कि जिसका जन्मदिन हो उसकी महिमा गाओ। लेकिन उससे अपना कुछ नहीं बनना है।** काकाजी ने पूछा था– महिमा गाया करने के बजाय क्या हम सच में माहात्मय में तरबोर (डूबे) रहते हैं ? माहात्मय में यानि– ऐसे संबंध वाले भक्त भगवान का माहात्मय हैं ! इनके साथ ऐसे तरबोर (मिलजुल कर) रहते हैं ?

आज का हार देखकर मुझे बड़ी खुशी हुई कि मंदिर के स्टाफ को ऐसा महसूस-एहसास तो हुआ कि काकाजी ये चाहते हैं। प्रभाकर-नवीनभाई से मिलजुल कर रहे, निमित्तस्वामी-अक्षरस्वामी से मिलजुल कर रहे, सुहृद्स्वामी सबके साथ मिलजुल कर रहे– यह एक भावना प्रदर्शित करी है। **यह भावना खाली हार बनाने में न रहे।** स्वामिजी, साहेब ऐसा हम सब को बल दें जाएं कि उस रास्ते हम सब अग्रसर हों और यह हो भी जाएगा। क्यों ? महाराज के दो प्रसंग हैं–

❖ महाराज के माता-पिता अंतर्धान होने के बाद वे उदास जैसे रहा करते थे। माता-पिता अंतर्धान हुए इसलिए नहीं, लेकिन किस तरह अब घर छोड़ कर जाना है–किस तरह मैं घर से निकलूँ ? वो सोच में वे डूबे रहते थे। बड़े भाई साहब को भी पता था, भाभी को भी महाराज के साथ खूब लगाव। एक दिन भाभी ने कहा कि– घनश्याम ! तुम बहुत उदास नज़र आते हो, आगे जाकर कभी हमें भूल नहीं जाना। तब महाराज ने उसको जवाब दिया कि– जिससे मेरा संबंध है, उसे मैं कभी नहीं भूलूँगा। सांसारिक सोच वाली, भाभी ने यह समझा कि– चलो, यह शादी करने–संबंध करने के लिए राजी हो गये और तभी कह दिया कि उसको मैं नहीं भूलूँगा। तब भाभी ने कहा कि– जिससे तुम्हारा संबंध होगा उसे तो तुम नहीं भूलोगे, लेकिन हमें भी नहीं भूलना। महाराज मन ही मन हँसे कि– भोली भाभी समझी नहीं कि मैं कह रहा हूँ कि– **एक बार भी इनकी निगाह में हम जो आये हैं, इन्हें वे कभी भूलने वाले नहीं हैं** और इनका प्रागट्य है भी इसीलिए। ऐसे संत अपने चरित्र से हमें दिखाते हैं कि वे किसलिए आए हैं ?

❖ महाराज के घर के पास उनका एक खेत था-'त्रिकोना खेतर' बोलते थे। वहाँ खीरे बोये हुए थे। इत्तफाक से रामप्रतापजी ने वहाँ से आते हुए खीरे निकाल कर चख लिए होंगे, तो सारे कड़वे थे। वे बड़े उदास हो गए कि सारी फसल बेकार हो गई। आकर के अपनी पत्नी से बात करी कि– इस साल खीरे की सारी फसल बेकार गई–सारे कड़वे हैं। इतने में घनश्याम आए और कहा कि– भईया ! अपने खेत के अंदर बहुत अच्छे खीरे हैं, देखो ! मैं ले आया हूँ। वो बोले यह कैसे ? मैं अभी तो चख कर आया हूँ। तो महाराज बोले– देखो ! सारे के सारे ऐसे हैं। मतलब **खारे जीव को मीठा करने के लिए इनका प्रागट्य है।**

ये बातें जब हम पढ़ते हैं, सुनते हैं तो **लगता है कि एक पैरेबल है।** लेकिन नहीं, वचनामृत लोया दस में लिखा है कि– **भगवान और संत जो बात करते हैं वो वाकई ऐसी ही है वो माने, वो सच में सुखी है**... और यह बात मैं क्या कह रहा हूँ कि– जैसे स्वामिजी ने बताया कि जब मुझे-मेरी प्रकृति को बदलने की अगर किसी संत ने हिम्मत करी है– काकाजी-योगीजी महाराज ने ! तो, आप लोगों की तो कोई बात ही नहीं है। किसलिए ? देखो, मेरी टेन्डेन्सी कैसी और आप लोगों की-आज के समाज की कैसी ?

मैं फर्स्ट इयर में पढ़ता था। तब एक पिक्चर आई थी 'जवाब'। बहुत पुरानी पिक्चर है-साईगल और कानन की। सोलह बार तो देख चुका था और मॉर्निंग शॉ में वो पिक्चर लगी हुई थी। मुझे वो पिक्चर देखने का बड़ा शौक ! उसी समय एग्ज़ाम भी थी ! अब एग्ज़ाम अटैन्ड करूँ कि पिक्चर अटैन्ड करूँ ? मैंने सोचा– एग्ज़ाम तो अगले साल भी आएगी। अगर यह पिक्चर आज चली गई और दोबारा नहीं आई तो ? सो टाईमिंग्स थोड़ा इधर-उधर करके–रिस्क लेकर , एग्ज़ाम छोड़ कर हम पिक्चर देखने गए !

वो हम थे और आज पंजाब में एक 'गुग्गु' है... उसको ऐसा कि गुरुजी का बर्थ-डे है और साथ ही उसकी एग्ज़ाम भी है। वो बर्थ-डे के लिए एग्ज़ाम छोड़ कर आये ! टीचर से बात कर ली कि– हमारे गुरुजी का बर्थ-डे है, आप कुछ एडजस्टमेन्ट कर दो... टीचर आख़िर मान गई कि तू तेरे गुरुजी के बर्थ-डे पर जा, तेरी यह प्रैक्टिकल की एग्ज़ाम मैं बाद में ले लूँगी। देखो, वो मेरा दिमाग़ कहाँ ? आज का जो समाज है वो कहाँ ? मुझे अंतर्दृष्टि कराता है।

एक पाँच साल का लड़का है-मधुर। हमारी 'गार्गी' का चेला है। स्कूल में उसका बच्चों के साथ कुछ झगड़ा हो गया। वो मार खाकर घर आ गया। पेरेन्ट्स ने ये मधुर को कहा कि– तू मार खाकर आया, तूने उसको क्यों नहीं पीटा ? तो वो लड़के ने जवाब दिया कि **अगर मैं उसको पीटूँ, तो हमारा मंदिर जाना और उसका मंदिर नहीं जाना–उसमें क्या फर्क पड़ेगा ?** पाँच साल का लड़का अपने बाप को कहता है कि– हम मंदिर जाते हैं, मैं भी इसको पीटूँ और वो मंदिर नहीं जाता है तो फिर फर्क कहाँ रहा ? अब **इतनी सूझ तो**– स्वामिजी जानते हैं कि– **साधु होने के बाद भी हम में नहीं थी।** हम तो एक ही समझते थे–ईंट का जवाब पत्थर से कैसे दिया जाये ! सब कहते हैं न गुरुजी को 'मुगल-ए-आज़म' बहुत पसंद ! उसके हर डायलौग में ईंट का जवाब पत्थर से था, इसलिए वो मुझे पसंद आई थी ! अब यह समझ आता है। कई चीजें हम करते हैं, लेकिन हमें पता नहीं होता कि हम किसलिए करते हैं। तो स्वामिजी-साहेब के पास, काकाजी-पप्पाजी के पास इतनी प्रार्थना है कि हमारा यह परज़िवरन्स टिका रहे, हम आपसे चिपके रहें या आप हमें चिपकाए रखना इतनी कृपा करना ! सहजानंदस्वामी महाराज की जय !

पू. मल्कानी अंकल

... आज गुरुजी की जन्म जयंती मना रहे हैं, दो-चार बातें मेरे मन में इधर बैठे-बैठे आई हैं कि– **जितने भाईयों ने आज लाभ दिया वो** सब बहुत ही बेहतर, **एक स्पीरीच्युअल ट्रेन्ड से** उन्होंने अपनी बातें रखी। बहुत ही आनंद हुआ कि लास्ट ट्वैन्टी ईयर्स में जब से आ रहे हैं, मैंने पहला टाईम ऐसा नोट किया या अंदर से औबज़र्व किया या फील किया कि हर एक ने बहुत भाव से अपनी बातें गुरुजी के विषय में पेश की।

गुरुजी का जन्म तो अंतर से शायद आप सब जितने भी बैठे हुए हैं, दिल से रोज ही मनाते हैं। हम भी जब रोज सुबह गुरुजी से जय स्वामिनारायण करते हैं, मन में यही होता है कि 'हैप्पी बर्थ-डे टू यू गुरुजी।' बच्चे भी सुबह गुरुजी को अपने मन से टैलीफोन करते हैं। मुझ से खुद कहते हैं कि– दादा, व्हाई डोन्ट वी कॉल गुरुजी ? कई बार ऐसा होता है कि गुरुजी उस टाईम या तो धून में बैठे होते हैं या तो कोई कार्य में लगे होते हैं–तो वो फिर उनका स्कूल का टाईम होता है, तो वो चले जाते हैं। फिर दूसरे दिन आते हैं, तो फिर पूछते हैं कि लेट अस कॉल गुरुजी ? आज उनके मन में एक ऐसी भावना है कि– **हम गुरुजी को 'जय स्वामिनारायण' बोल कर जाएंगे तो हमारा सारा दिन जो है वो बहुत ही बेहतर तरीके से गुजरेगा।** आज इतने यहाँ जब **सब सत्संगी बैठे हुए हैं**, मैं ऐसा फील करता हूँ कि– **वो सिर्फ सत्संगी नहीं हैं, वो एक गुरुजी के पार्ट ऑफ लार्जर फैमिली हैं।** यहाँ जो छोटे बच्चे भी बैठे हुए हैं, उनको भी पता है अगर **घर में कोई** नाराज़गी हो या किसी से भी **कोई बात हो जाए, तो हमारी बात सुनने के लिए कोई यहाँ बैठा हुआ है।** वो बड़े फ्रीली गुरुजी के पास आते हैं, चाहे वो छोटे उम्र के हों या चाहे मेरे जैसे बड़े उम्र के हों। **एक रास्ता खोल दिया हुआ है, एक लार्जर फैमिली बना ली है....** मैं आज बड़े आनंद से कहता हूँ अंतर से कि– **गुरुजी ईज़ ए गुणातीत स्वरूप।** जितने भी सब गुण हैं, वो (उन) सबसे ऊँचे हैं। वो किसी गुण में डूबते नहीं हैं।

एक्चुअली, गुरुजी को पहचानने में कुछ मदद मुझे मेरे लड़के 'अजय' ने करी है। आज मैं देखता हूँ कि– भले ही अजय को फिज़ीकल स्ट्रैस हो, पर उसका मैन्टल स्ट्रैस - अंतर का स्ट्रैस बिलकुल दूर हो गया है, हट गया है। उसका कारण यह है कि उसको गुरुजी में पूरा विश्वास है। चाहे वो यहाँ वीकली आए या नहीं। गुरुजी जब बुलाते हैं तब तो वो जरूर आ जाता है। **उसका मैन्टल स्ट्रैस जो खत्म हो गया है और उसका मुख्य कारण है कि उसको फुल फेथ है** कि– **गुरुजी जो उसको कहेंगे वो उसके हित के लिए ही होगा; चाहे उस टाईम उसको बात जँचे या न जँचे।** गुरुजी ने सारे यहाँ के फैमिली पर, चार सौ-साढ़े चार सौ फैमिलीझ के जितने भी सदस्य हैं उन पर बहुत कृपा करी है। बहुत टौलरन्स दिखाया है.... उसके लिए गुरुजी को बहुत बहुत धन्यवाद ! एन्ड आई होप कि गुरुजी ऐसे ही टौलरन्ट रहेंगे ताकि सारा सत्संग आगे बढ़ता रहे और बच्चों को भी 'स्वामिनारायण' मंत्र का एक नशा आ जाए और सबका जीवन अंतर से सुखी-सुखी हो जाए...

(ध्वनिमुद्रण से संकलित आशीर्वचन एवं उद्‌बोधन)

ताड़देव की गतिविधियाँ

हम सभी जानते हैं कि 1986 में प्रभुस्वरूप प.पू. काकाजी ने स्थूल शरीर से हम सब के बीच से विदाई ली, तब से हमें प.पू. काकाजी की कमी महसूस ना हो व प.पू. काकाजी के प्रति एक अनोखी प्रीति के दावे से प.पू. पप्पाजी लगातार कई वर्षों तक प.पू. गुरुजी की जयंती पर दिल्ली अचूक आते रहे और हमें उनके दर्शन, सेवा, समागम का सुख देते रहे। पर, पिछले कुछ साल से प.पू. पप्पाजी की तबियत ज़्यादा अच्छी नहीं रहती, सो प.पू. गुरुजी ने उन्हें प्रार्थना करी थी कि आप अब दिल्ली आने का परिश्रम नहीं लेना, मैं आपके पास आशीर्वाद लेने आ जाया करूँगा...

यूं, प.पू. गुरुजी हर वर्ष फरवरी में तिथि के मुताबिक या 13 मार्च के आस-पास प.पू. पप्पाजी के आशीर्वाद लेने जाते ही हैं। इस बार भी प.पू. गुरुजी मार्च में जाने का प्रोग्राम बना रहे थे कि बहनों ने सहज पूछवाया कि–बहुत समय से प.पू. पप्पाजी दिल्ली नहीं आ पाए हैं, सो हम भी उनके दर्शन करने चलें ? और... इस भावना से जुड़ कर करीब सौ हरिभक्तों का काफिला भी जाने तैयार हो गया !

प.भ. विनोदभाई ठक्कर के जिगरी मित्र **प.भ. कन्हैयालालजी** अमदावाद में रहते हैं। पहले से उन्हें प.पू. गुरुजी के प्रति एक सद्भावना है कि ये बहुत अच्छे संत हैं। उन्हें जब प.भ. विनोदभाई ने प.पू. गुरुजी के प्रोग्राम के बारे बताया, तो खूब उमंग व उत्साह से उन्होंने गांधीनगर के रास्ते पर अपने फार्म हाऊस में ही प.पू. गुरुजी व मुक्तों के ठहराने की भावना बताई।

भक्तों की सुविधा के लिए एक महिने में तो प.भ. कन्हैयालालजी ने फार्म पर चार नए टॉयलेट-बाथरूम बनवा दिए और कोठी पर नया पेईन्ट भी करवाया ! उस दौरान दिल्ली से जब भी कभी उन्हें फोन करते, तो वे फार्म हाऊस पर ही मिलते !!

13 मार्च की सुबह 'ताड़देव' मंदिर में **प.पू. गुरुजी की जयंती** का छोटा-सा उत्सव करके दोपहर की 'आश्रम एक्सप्रेस' से करीब 80 हरिभक्त अमदावाद जाने निकले और शाम की फ्लाईट से करीब 17 मुक्तों के साथ प.पू. गुरुजी रात को अमदावाद पहुँचे... अमदावाद में मुंबई, वडोदरा, राजकोट, वापी के कई हरिभक्त भी प.पू. गुरुजी के समागम के लिए पहुँचे हुए थे। फार्म हाऊस पर 13 मार्च की रात को प.पू. गुरुजी के स्वागत में दिए जलाए थे, जो इस भावना के प्रतीक रूप थे कि हम धन्य हुए क्योंकि जीवन की होली को 'दीवाली' बनाने वाले भगवान रखे सच्चे संत हमें मिल गए। ऐसे संत से ही तो जीवन में सच्चा उजाला है। प.पू. गुरुजी ने अपने प्रवचन में बताया कि–

'सालों पहले प.पू. काकाजी मुझे कहते कि उत्तर भारत में सिन्धी-पंजाबी मुक्त तुम्हारी खूब सेवा करेंगे।'

प.पू. गुरुजी यह बात सुन कर सोचते कि भला सिन्धी कहां से हमारे कॉन्टेक्ट में आएंगे ?' पर, **आज देखते हैं कि प.भ. मल्कानी अंकल ने दिल्ली मंदिर के निर्माण में अपना अत्यधिक सहयोग दिया और अब ये प.भ. कन्हैयालालजी भी सिन्धी ही हैं...**

प.भ. कन्हैयालालजी ने अपने फार्म हाऊस के नज़दीक ही अन्य दो कोठियों में भी मुक्तों के ठहरने की व्यवस्था करी। वहां मुक्तों की सुविधा को खूब ध्यान में रख कर हर एक कमरे में एवं बाथरूम में कंघी, टूथ पेस्ट-ब्रश, शेम्पू के पाऊच इत्यादि रखे थे... यहां तक कि रोज पढ़ने के लिए अखबार भी आते थे ! यह देख कर कई भक्त सोच में पड़ गए कि कैसी महिमाभरी दृष्टि होगी ? और... अमदावाद में प.पू. गुरुजी के प्रति दृढ़ निष्ठा से जीने वाले भले मुट्ठीभर ही हरिभक्त हैं, पर जिस भाव से–उमंग-महिमा से एक महिने से रात को दो-दो बजे तक जाग कर उन्होंने प.भ. कन्हैयालालजी के साथ मिल कर यह सारे शिविर की जो व्यवस्था करी, वह सभी मुक्तों के दिल को भीतर तक छू गई !

अबकी बार अमदावाद की शिविर में मानो महाराज को '**स्वामिनारायण**' मंत्र की अपरिमित शक्ति का विस्फोट डेमोन्सट्रेशन करना था...

अंतर्दृष्टि कराने,
प्रभु की शक्ति का अनुभव कराने,
एक पारिवारिक माहौल का सर्जन करके
आपस में सुख-दुःख बांटने
और
एक-दूसरे को करीब लाने का स्रोत यह शिविर बन गई।

यूं कहें कि प.भ. कन्हैयालालजी जैसे दिलेर व्यक्ति को भगवान अखंड रखे सच्चे संत से जुड़ते देख कर माया चिढ़ जैसी गई कि यह जीव मेरे चंगुल से निकल कर प्रगट प्रभु में जुड़ कैसे जाए ? सो, माया ने अपना प्रपंच फैलाना शुरु किया।

14 मार्च की सुबह **प.भ. मेहुल कुमार** का दो साल का बच्चा उनकी ही गाड़ी के अगले टायर में फंस गया! गाड़ी को तनिक भी आगे-पीछे करने की कोई गुंजाईश नहीं थी। वह देखते ही सब अंतर से तीव्र भजन करने लग गए और... महाराज ने कुछ ऐसी सूझ दे दी कि सेवकों ने गाड़ी को ही उठा कर बच्चे को निकाल लिया ! बच्चा डर से सहम कर बेहोश जैसा हो गया था। प.पू. गुरुजी पूजा में ही बैठे थे। सो, उसे तुरंत प.पू. गुरुजी के पास लेकर आए। उन्होंने उस पर प्रसादी का जल छांटा, तब वह थोड़ा रोया और सब की सांस में सांस आई।

प.भ. कन्हैयालालजी बिना चप्पल पहने हुए गाड़ी लेकर उस बच्चे का 'चेकअप' करवाने दौड़े। बच्चे का सारा चेकअप हुआ। भक्तों का आंतर्नाद प्रभु ने सुना और सब ठीक-ठाक था। लेकिन, डॉक्टर्स ने उसे अंडर ऑब्ज़र्वेशन रखने के लिए कहा। प.पू. गुरुजी के पास मेसेज़ आया, तो वे एकदम बोले कि डॉक्टर्स को बोलो कि हमारे महाराज उसे ऑब्ज़र्व करेंगे, आप उसे छुट्टी दे दो !

तत्पश्चात् प.पू. गुरुजी ने प्रोग्राम के मुताबिक शिविर की शुरुआत **'स्वामी की बातें'** की पारायण से करवाई। शाम को वहीं प.पू. गुरुजी की जन्म जयंती निमित्त सभा रखी हुई थी। सभा में बात करते हुए प.भ. कन्हैयालालजी ने बात करी कि–

पिछले साल नवंबर में वे दिल्ली से होते हुए अपने परिवार के साथ नैनीताल घूमने गए थे और वहां उनकी माताजी की तबियत अचानक खराब होने के कारण उन्हें दिल्ली अस्पताल में भर्ती करना पड़ा था। उस समय प.पू. गुरुजी के संबंध से प.भ. विजयपालजी, प.भ. विनोदभाई, सौ. शोभना भाभी व सारे सत्संगी परिवार ने जिस आत्मीयता से उनकी माताजी की सेवा करी, वह उन्हें खूब स्पर्श कर गई ! तब मन ही मन उन्होंने संकल्प किया कि– ***प.पू. गुरुजी यदि सच्चे संत हैं, तो वे खुद ही सारे हरिभक्तों को लेकर अमदावाद आएं; मुझे उनका आभार व्यक्त करना है।***

यह बात उन्होंने किसी को भी नहीं करी थी। यह सब सुन कर रहस्य पता चला कि सारा प्रोग्राम जो बना, वह प्रभु प्रेरित ही था।

इतनी सेवा के बावजूद भी प.भ. कन्हैयालालजी प.भ. विनोदभाई को बोले कि–

प.पू. गुरुजी ने उस समय जो मेरे लिए किया था, उसका तो यह मैं दस प्रतिशत भी नहीं कर रहा हूँ।

प.पू. गुरुजी की परावाणी का लाभ लेकर सभी ने प्रसाद लिया।

बाद में महिलाओं का गरबे का प्रोग्राम रखा था। इतने में करीब पौने बारह को प.भ. विनोदभाई कुर्सी पर बैठे-बैठे अचानक बेहोश जैसे हो गए। मुँह से झाग निकलने लगा और उनका शरीर एकदम शिथिल हो गया। ऐसा लगा कि उनको शायद दिल का भारी दौरा जैसा पड़ा है। सब को एक बार लग ही गया कि यह केस तो हाथ से गया। एक बार फिर प.भ. कन्हैयालालजी गाड़ी लेकर अस्पताल के लिए तेज़ी से शहर की ओर दौड़े। प.पू. गुरुजी भी उनके पीछे-पीछे अस्पताल जाने निकले। इधर सभी हरिभक्तों ने सुबह की तरह जोर-जोर से 'स्वामिनारायण' धून करनी शुरु कर दी। सच, महाराज ने बहुत रक्षा करी कि रास्ते में ही उन्हें होश आ गया। अस्पताल में पहुँच कर प.भ. विनोदभाई का जब 'चेकअप' कराया तो सब कुछ नॉर्मल था। सभी ने 'स्वामिनारायण' मंत्र की अद्‌भुत ताकत व प्रभु के प्रगटपन को महसूस किया। मानो सभी के दिल में हमेशा के लिए प.पू. काकाजी ने पक्की प्रतीति कराई कि **कोई भी प्रॉब्लम आने पर मिलजुल कर तीव्र पुकार करोगे, तो अवश्य रक्षा होगी ही।** रात को करीब डेढ़ बजे प.पू. गुरुजी वापिस आए। एक दिन के लिए डॉक्टर्स ने प.भ. विनोदभाई को ऑब्ज़र्वेशन में रखा और बताया कि यह मीर्गी का दौरा था।

प.भ. विनोदभाई की बीमारी का इतना बड़ा प्रसंग बना... इतने बड़े हादसे के बावजूद **उनकी धर्मपत्नी सौ. मीना भाभी की स्थिरता, प.पू. गुरुजी के प्रति लगाव– अडिग निष्ठा और उनको ऐसे भयंकर समय में भी विचलित ना होते देख कर, बल्कि भजन करते देख कर प.भ. कन्हैयालालजी व सभी भक्त नतमस्तक हो गए।**

दूसरे दिन दो हरिभक्तों की गाड़ियों का अलग-अलग समय एक्सीटेन्ड भी हुआ, पर महाराज ने जैसे कि अपने हाथों में उठा कर रक्षा करी हो ऐसा स्पष्ट अनुभव भी हुआ। सच, भजन करा के मानो सब के इकट्‌ठे प्रारब्ध महाराज ने टाल दिए हों... प्रगट की निष्ठा वाले भक्तों के तीव्र भजन के सामने माया का कुछ जोर चल नहीं पाया। स्वामी की बात प्र. 1 की 274वीं में लिखा है कि **दुःख आए, परेशानी आए तो क्या करना ?** उत्तर में स्वामी ने कहा कि–**'स्वामिनारायण-स्वामिनारायण' भजन करना। इससे परेशानी टल जाएगी।** कितना आसान उपाय बताया ? पर हम पकड़ नहीं पाते,

सो महाराज को ऐसे प्रसंगों द्वारा हमें समझाना पड़ता है और प.पू. गुरुजी ने भी अपनी बातों में बताया कि–
ये सारे प्रसंगों से लगता है कि हम पर घूमते काल चक्र से महाराज ने हम सब की रक्षा करी है। *आख़िर,* ***माया की हार हुई और प.भ. कन्हैयालाल की निःस्वार्थ भक्ति की जीत हुई !***

15 मार्च की सुबह प.भ. कन्हैयालालजी के फार्म हाऊस पर महापूजा करके, दोपहर को प्रसाद लेकर सारा काफिला शाम को सवा पाँच-साढ़े पाँच बजे प.पू. गुरुजी के साथ विद्यानगर के लिए रवाना हुआ। प्रोग्राम अनुसार पाँच बजे तो विद्यानगर पहुँच जाना था, परंतु इन सारे संजोगवश लेट हो गए। प.पू. गुरुजी व भक्तों के आने की राह देखते प.पू. पप्पाजी तो पौने पाँच बजे से तैयार होकर बैठे थे।

रात को करीब पौने आठ बजे विद्यानगर– **'गुणातीत ज्योत'** के पंचामृत हॉल में आयोजित प.पू. गुरुजी की 67वीं जन्म जयंती निमित्त सभा में सभी पहुँचे। प.पू. गुरुजी का स्वागत और माहात्मय दर्शन कराते हुए **पू. ईलेशभाई** ने कहा कि–
आज खूब आनंद का दिन है कि गुरुजी दिल्ली से उनके मंडल के साथ पधारे हैं... शून्य में सर्जन करके, आधी रात को भी जो खड़े रहें ऐसे ३०० परिवारों का समुदाय प.पू. गुरुजी ने स्वतंत्र रूप से तैयार किया है और प.पू. पप्पाजी भी खूब राजी हैं।

दूसरी ओर– **पू. विज्ञानस्वामी** ने माहात्मय ज्ञान गाते हुए कहा–
गुरुजी इतने हरिभक्तों के साथ यहां पधारे, वह उनकी महानता नहीं है, लेकिन सभी के अंतर में काकाजी का स्थान बना दिया, वह गुरुजी की महानता है।

प.पू. निर्मलस्वामिजी ने बात करते हुए कहा कि–
आज गुरुजी का प्रागट्य दिन मनाने के लिए हम इकट्ठे हुए हैं। सभी के सान्निध्य में भगवान स्वामिनारायण की एक दिव्य चेतना का पप्पाजी द्वारा हम सभी को दर्शन हो रहा है... पप्पाजी का जो मौन है, उससे अनेक प्रकार की हमें प्रेरणाएँ मिलती हैं... काकाजी के साथ वर्षों तक हम रहे... लेकिन आज गुरुजी में काकाजी का साक्षात् दर्शन हमें होता है। गुरुजी इतने अधिक दूर हैं–दिल्ली, फिर भी हम से दूर हैं ऐसा महसूस नहीं होता... ***पप्पाजी के मौन से हमें पहले ऐसा होता था कि पप्पाजी बोलते नहीं। लेकिन काफी समय से जब हम दर्शन करते हैं, प्रार्थना करते हैं, कुछ संकल्प करते हैं–पप्पाजी के पास जाएं या नहीं जाएं, लेकिन जो भी संकल्प करते हैं, वह जरुर सिद्ध होता है...***

काकाजी ने बहुत सुंदर बात करी थी कि तालाब में पानी भरा होता है, किनारा होता है, सीढ़ियाँ होती हैं–यह सब होता है... ***सूर्य के प्रकाश से सब कुछ 'प्रकाशित' तो होता है। लेकिन 'प्रगति' कमल की होती है।*** *सब 'प्रकाशित' हो गया और 'प्रगति' कमल की हो गई ! काकाजी ने बहुत सुंदर बात करी कि संप्रदाय प्रकाशित हो गए, धर्म प्रकाशित हो गए, सब कुछ प्रकाशित हुआ-लेकिन प्रगति नहीं हुई। हमने प्रश्न पूछा- 'प्रगति' यानि क्या ?* ***योगीजी महाराज के कायदे से संप, सुहृद्भाव और एकता से हम निर्दोषबुद्धि से काम करें, वह प्रगति हुई कही जाए...*** *काकाजी ने ऐसी दूसरी बात नापा में करी कि– हमें 'सफलता' खूब मिली है, लेकिन 'सुफल' नहीं हुए... बापा मिले हैं और उनकी दृष्टि तथा आशीर्वाद और उनको जो जँचता था ऐसा जीवन जीएं तो 'सुफल' हुए कहे जाएं। आज* ***गुरुजी 'सुफल' हुए हैं। गुरुजी की 'प्रगति' का दर्शन होता है*** *और संपूर्णतया काकाजी का दर्शन होता है। कुछ अच्छा लगाने के लिए नहीं कहता, लेकिन मुझे ऐसा दर्शन होता है इसलिए मैं बोल रहा हूँ कि चौबीस घंटे गुरुजी और हम साथ ही हैं–इकट्ठे ही हैं ऐसा आज दर्शन हो रहा है... पप्पाजी को प्रार्थना करें कि हम साधुता की दृष्टि से देखें, जैसी योगीजी महाराज को जँचती थी और ऐसी साधुता हम में आए। दूसरी बात– हम भजनिक बनें... सहजानंदस्वामी महाराज की जय।*

तत्पश्चात् केक अर्पण और कीर्तन गान के बाद पू. जयंतीभाई ने प.पू. गुरुजी को भेंट अर्पण करी और आए हुए मुक्तों को प.पू. ज्योति बहन ने स्मृति भेंट दी।

प.पू. गुरुजी ने आशिष याचना करते हुए कहा–
...हम भले कितनी ही शेख़ी मारते होंगे, लेकिन काका या पप्पा हमें जो कहते, उसके मुताबिक हम सौ प्रतिशत तो जीए नहीं हैं। *उसकी वजह यह है कि हम से कुछ, कुछ, कुछ हमारा ('स्व') अपनापन छूटा नहीं–जिसके लिए उन्होंने बहुत प्रयत्न किया... लेकिन उनके वचन को हमने कुछ नज़रअंदाज ही किया।*
यहां एक सभा में काका बोले थे– एक 'आध्यात्मिक समाज' की स्थापना हुई, लेकिन मैं उसे 'दिव्य समाज' नहीं कहूँगा... मैंने भी वे शब्द पकड़े कि 'आध्यात्मिक समाज' और 'दिव्य समाज' में फर्क क्या ? लेकिन हमें ऐसा था कि काका तो ऐसी बड़ी-बड़ी बातें करते हैं। हम जैसा जीते हैं, उस तरह

जिया करें—वे भले कहें। उस बारे ज़्यादा परवाह करी नहीं। आख़िर-आख़िर में वे सभी सेन्टर्स में घूमते और एक प्रश्न पूछते— बोलो राजा, रुचि और सुरुचि में क्या फर्क ? तब भी हमें यूं लगता कि यह तो कहना होगा तो वे ही कहेंगे। लेकिन मैं मानता हूँ कि तब हमारा आलस बाधा रूप हो गया। फिर भी बड़े पुरुष कैसे ? काका फटाक स्थूल रूप से अंतर्धान हो गए। पप्पा ने मौन ग्रहण किया... महाराज ने इस प्रकार हमारे लिए संजोग खड़े कर दिए हैं कि अब हमें तीव्रता से ऐसा भजन करना पड़ेगा। हैं तो उनके ही। अभीप्सा भी वही रहने वाली है कि वे कैसे राजी हों...

...पर, एक जगह काका ने ऐसा लिखा है कि गुणातीत ज्ञान में भूल कबूल करे नहीं चलती। ***वह टालने के लिए तीव्र प्रार्थना और एक ऐसा सत्कर्म करना पड़े।*** *अब हमारे लिए दूसरा उपाय रहा नहीं है। हम पूरे उनके होकर जीए नहीं हैं—यह भी हकीकत है।* ***हमें जो कन्टेन्टमेन्ट लगती होगी, वह हमारा भ्रम है*** *—ऐसा लगता है...* ***हम अभी जिस विराम-विश्राम स्थान पर होंगे, उसे मान बैठे हैं कि हम 'अक्षरधाम' का सुख भोग रहे हैं।*** *पप्पा भी हमें कहते रहे, कहते रहे। संप, सुहृद्‌भाव, एकता की हमें हर बार एक की एक बात करते रहे। हम ने भी उस बात को खूब रीपीट करी। लेकिन, भीतर में सोचें; निर्मलस्वामी ने बहुत अच्छी बात करी।* ***मैं भी व्यक्तिगत रूप से मानता हूँ कि विकास खूब हुआ।*** *गुणातीतानंदस्वामी की बात है कि पत्ते-पत्ते पर स्वामिनारायण... ये सारी चीज बनी।* ***लेकिन 1966 में संस्था ने हमें दूर किया, तब हम जो बात करते थे कि हमारी सारी केटेगरी ही अलग है। हमारी तो रीसर्च की क्लास है। वे हम आज एक जगह खड़े रह गए हैं।*** *आज पप्पाजी बैठे हैं इसलिए बात करता हूँ—घर-घर के बैठे हैं। तो अब हमें तीव्रता से ऐसी प्रार्थना करनी है कि* ***काका कहते कि हमें छलाँग मारनी है।*** *ऐसे भजन से ही यह कुछ पार हो पाएगा। आज के दिन पप्पा के पास भी यही आशीर्वाद माँगने हैं कि पप्पा हम जहां कहीं अटक गए हैं—* ***सत्संग खूब बढ़ गया; लेकिन उसकी गहराई में अभी हम पहुँचे नहीं हैं— जितनी पप्पा, काका ने हमारे पास से अपेक्षा रखी थी...***

एक बात है—हम हैं सिन्सियर, उसमें भी ना नहीं। लेकिन कुछ, कुछ, कुछ हमें जँचता, हम हमारे अंदर के मृग में बंध गए हैं। जल्दी ही भजन से उसे ढूँढ कर और अब छोड़ सकें... ***सारा समाज हमें 'काका और पप्पा के' मान कर पहचानता है। हम भी वही चीज करा करें जो सामान्यतः सभी करते हैं, तो हम काका और पप्पा का क्या परिचय देंगे ?*** *मुझे हमेशा ऐसा रहता है कि हम कुछ ऐसा विशेष करें। वह क्या कि— संप, सुहृद्‌भाव और एकता की जो बापा बात करते और काका ने पकड़ कर हमारे जीव में डाली वह जीवन जीएं... अंतर से ऐसे खूब नज़दीक बन कर रहें। साल ही कितने रहे ? और अब बाल भी सफ़ेद हो गए।* ***अक्षरधाम में तो सभी को इकट्ठे ही रहना है।*** *ऐसी एकता से हम काका और पप्पा को राजी करें। यही बड़े से बड़ी सेवा हम कर सकें ऐसे पप्पा आज आशीर्वाद दें यही प्रार्थना !*

तत्पश्चात् प.पू. पप्पाजी ने माईक लेकर कुछ बोलना चाहा, परंतु वह स्पष्ट ख्याल नहीं पड़ा। लेकिन ध्वनिमुद्रित आशीर्वाद बरसाए—

गुरुजी ने काकाजी का चिंतन खूब किया, तो जैसे कीड़ा (ईयळ) भ्रमरी बन जाती है, वैसे गुरुजी काकाजी स्वरूप बन गए हैं। तो, दिल्ली के मुक्त गुरुजी का चिंतन करें ऐसी प्रार्थना !

सभा के बाद सभी प्रसाद लेकर प.पू. साहेब के पास ब्रह्मज्योति रात को ठहरने चले गए। 16 मार्च की सुबह सात बजे ब्रह्मज्योति के मंदिर में भी प.पू. गुरुजी की जयंती निमित्त छोटी सभा रखी थी। सभी ने प.पू. साहेब व प.पू. गुरुजी के आशिष प्राप्त किए। नाश्ते के बाद सभी ने प.पू. काकाजी और प.पू. बा की समाधि की परिक्रमा करी।

इस दौरान प.पू. गुरुजी व कुछ मुक्त प.पू. पप्पाजी के दर्शनार्थ गए, तब **प.पू. पप्पाजी ने एक अद्‌भुत जेस्चर किया।** उन्होंने **प.पू. गुरुजी को जबरदस्ती अपने सोफे पर बिठाया** और **1985 में प.पू. काकाजी ने प.पू. गुरुजी को अपना कोट पहना कर लाड़ लड़ाया था, वो स्मृति करा दी।** डॉ. नीलम बहन ने बताया कि प.पू. पप्पाजी ने उस दिन दो बार भोजन ग्रहण किया और अच्छी तरह रात को सो भी गए थे। बहनें तो मज़ाक में बोली भी कि— हमें दिल्ली वालों को जल्दी-जल्दी बुलाना पड़ेगा। दोपहर को वापिस ब्रह्मज्योति आकर प.पू. साहेब व प.पू. गुरुजी के सान्निध्य में सभी ने प्रसाद लिया और ढेर स्मृतियों का खज़ाना लेकर पश्चिम एक्सप्रेस से दिल्ली लौटने वाले मुक्त तीन बजे वडोदरा जाने रवाना हो गए। रात के आठ बजे की फ्लाईट से प.पू. गुरुजी व अन्य मुक्त दिल्ली आने निकले... सब दिल्ली वापिस आ गए, पर सभी भक्तों की चित्तपट्टी पर अमदावाद में बने प्रसंगों की स्मृति-मंत्रशक्ति के अनुभव एवं प.पू. पप्पाजी का मार्मिक दर्शन-स्पर्श चिरंजीव बन गया !

निर्दोषबुद्धि के क्षितिज प.पू. काकाजी महाराज की जयंती और गुरुपूर्णिमा के अवसर पर....

12 जून को प्रभुस्वरूप **प.पू. काकाजी महाराज की जयंती** और **2 जुलाई** को **गुरुपूर्णिमा**... ये दोनों मंगलकारी दिन अब की बार एक-दूसरे के खूब करीब-करीब हैं। गहराई से यदि देखें तो हमारे लिए दोनों ही पर्व मानो एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। प.पू. काकाजी व प्रत्यक्ष गुणातीत स्वरूपों के रूप में अक्षरपुरुषोत्तम की शुद्ध गुरु परंपरा के वारिसदार हमें मौज रूप मिले, जिनके प्रथम दर्शन में ही उन्होंने हमारी चेतना को छू लिया—भीतर में बैठ ही गए और अब हमारे ही प्रारब्ध व प्रकृति का उपयोग करके हमारी चेतना को शुद्ध चैतन्य ब्रह्म बनाने का निरंतर उद्यम कर रहे हैं...

प.पू. काकाजी के बारे.... उनकी कई विशेषताओं में से एक यह थी कि क्रांतिकारी होने के बावजूद उनके सिद्धांतों का सच्चे आध्यात्मिक और दिव्य जीवन के साथ संपूर्ण समन्वय है। सो, ही उनकी कार्यप्रणाली बिलकुल अनोखी व अनुपम है। किसी भी प्रकार की मानसिक क़वायद - **मेन्टल जिम्नेस्टिक की अपेक्षा** सच्चे दिल की अंतर की अभीप्सा एवं **सर्वोपरि चेतना के साथ के दिव्य संबंध पर ही उनका विशेष आग्रह है।** वे दावे से कहते थे—

सच्चे सद्‌गुरु की शरण में जाकर उनको समझदारी युक्त और प्रेमपूर्वक समर्पण करने से उनकी कृपा होने पर सेवक का आध्यात्मिक विकास खूब ही सरल और सहज बन जाता है। शिष्य यदि सच्चे अर्थ में सहकार दे, तो ऐसे गुरु की कृपा सेवक को सर्व प्रकार के भय-तकलीफों-दुःख और चिंता से अचूक मुक्त करती है।

प.पू. काकाजी के हृद्‌य की विशालता, ख़ानदानी, विनम्रता और स्वामी-सेवकभाव जैसे अनेक कल्याणकारी गुण व उनके द्वारा हुए मुमुक्षुओं को हुए अनुभव ही स्पष्ट दर्शन कराते हैं कि वे सच्चे अर्थ में ऐसे सद्‌गुरु—ब्रह्मस्वरूप संत हैं।

'गुरुमहिमा' दरअसल अगाध सागर जैसी है। कहावत है कि—किनारे पर खड़े रहने वाले थोड़ी देर ही आनंद के अधिकारी बनते हैं। पर, गहरे पानी में उतरने वाला अमूल्य मोती प्राप्त करता है। ठीक उसी प्रकार 'गुरु' में पूर्ण रूप से डूब जाने से—उसी का होकर जीने से सच्चा आध्यात्मिक ज्ञान—शाश्वत् आनंद प्राप्त होता है।

1980 की 'गुरुपूर्णिमा' के मंगलकारी दिन पर प.पू. काकाजी ने—

सरलता से ब्रह्मज्ञान प्राप्त करने की,
गुरु की अगाध महिमा समझने की,
*सही अर्थ में **'सच्ची गुरुपूर्णिमा'** मनाने की,*
***'गुरुपूजन'** करने की करामात समझाई है।*

तो आइए, इस आशीर्वचन के एक-एक शब्द की गहराई समझ कर समय गंवाए बिना अब जाग्रत बनें और सही मायने में **'गुरुपूर्णिमा'** पर कृतनिश्चयी बन कर **2 जुलाई की सुबह** को **'गुरुपूजन'** करने एकत्रित हों।

' **आज** का दिन सत्य शोधकों के लिए, शिष्यों के लिए, सिद्ध पुरुषों के लिए और एकांतिकों के लिए भी एक अनोखा दिन है। क्यों ? कि जो परम गुरु परमात्मा है, वो गुरुहरि बन कर मेनिफेस्टेशन में पूर्णतया पृथ्वी पर मानव रूप में आते हैं। उसको 'अवतार' बोला जाता है। वो अवतार भी दो रूप में होता है। एक 'भक्त' अवतार होता है, एक 'मुक्त' अवतार होता है। एक राजा रूप होता है, रामचंद्रजी-कृष्ण भगवान जैसे और दूसरा अवतार साधु रूप होता है — दत्तात्रय-कपिल जैसे।

...हमारे स्वामिनारायण भगवान की एक बड़ी खूबी है... मेरे स्वामिनारायण में गुरु गुणातीत—जूनागढ़ का जोगी असली प्रगट हुआ। बीस हज़ार साल में ऐसे गुरु आए नहीं हैं। उन्हें नहीं पहचाना, बहुत दुःखी हुआ। दुःखी होने का अपना स्वभाव है। सुख मिलेगा—दूधपाक मिलेगा, तो उसमें रेती डाल कर खाएगा ! उसका नाम 'हिन्दुस्तानी' है और अभी ये पेईनफुल जर्नी आपको छोड़ना पड़ेगा। क्योंकि आप मेरी—हमारे संबंध में आ गए हो... हमारे में सद्‌भाव रखेगा या हम

को गालियाँ निकालेगा, हम को जूतियाँ मारेगा या हमारा बखान करेगा– हम को बिलकुल असर नहीं होगी, कुछ नहीं होगा। लेकिन हमारे पास एक टाईम भी आया ना ? सच, खुद आया ना ? मेरे योगी बापा का धब्बा खाया ना ? उन्हें आपके चर्मचक्षु से देखा क्या ? हम आपको नहीं छोड़ेगा–किधर भी जाओ। पहले तो–कृपा है ही कि आप मानव रूप में हो, जानवर तो हो नहीं। लेकिन धंधा करते हो जानवर जैसा–घास खाने का, खून करने का, ईर्ष्या करने का, मेरा-तेरा करने का, अंधकार में रहने का। **सूर्य मिला है फिर भी अंधकार में रहने का, दुःखी रहने का।** क्यों भई, क्या गड़बड़ हो गई ? बस मेरा इनर स्वभाव है ! सुबह मैं उठता हूँ तभी से मैं बहुत ग्लानि में रहता हूँ। बड़ी अजब बात हो गई ! वो क्या करता है ? वो 'ग्लानि समाधि' करता है, 'आनंद समाधि' नहीं करता है।

तो, आज का बड़ा दिन है साधकों के लिए, सत्यशोधक के लिए, सुखी होने वाले के लिए, शिष्यों के लिए, सिद्ध और श्रोत्रिय पुरुषों के लिए, एकांतिकों के लिए भी। **आज सद्गुरु देव जो हैं, उनका गुरु पूजन है। वो पूजन परमात्मा का होता है। वो परम पुरुष का होता है, पुराण पुरुष का होता है, ब्रह्मनिष्ठ जो पुरुष होता है**–जैसे पप्पाजी हैं, स्वामिजी हैं। चलो, अभिमान की बात आज बोल देता हूँ–काकाजी भी हैं और महंतस्वामी भी हैं। दूसरा भी होगा– ज्ञानेश्वर भी, तुकारामजी और वो भी था। मैं ये चार पुरुषों को पहचानता हूँ और मेरे गुरुदेव–वो असली मुक्तावतार और भक्तावतार तैयार करते थे–हज़ारों-लाखों को, वो आज उसकी बख़्शिश है। मौज है, क्या मौज है ? पहले तो आपको, मानव देह मिला है, वह बड़ी चिंतामणि है। **देवलोक से भी कर्म भोगने के बाद मानव रूप में आना पड़ेगा।**

मैं जो बोल रहा हूँ, वो मैं एक्सपेरीमेन्ट करके–मेरे पर पूरा टेस्ट करके मैं बोल रहा हूँ। **हमने परम गुरुराज्य, गुणातीत के राज्य की एक बड़ी योजना सब के लिए खुल्ली रखी है।** सब को प्रवेश दे देगा। हर एक जगह पर कुछ नियम होता है... हमारी तो इस्माईलिया कॉलेज है। स्वामिजी और हमने डिक्लेयर कर दिया कि तुम दो मार्क लाओ, पाँच मार्क लाओ, आख़िर एक मार्क लाओ–हम सत्तर मार्क कर देगा। क्योंकि यह इस्माईलिया कॉलेज है, ये ज़ेवियर कॉलेज नहीं है। और ये कॉलेज में आपने कबूल किया कि काकाजी और स्वामिजी हम से कुछ होगा नहीं और जो कुछ भी है आपका है। लेकिन, एक शर्त है। ये शर्त क्या है कि–'मैं अक्ल वाला नहीं हूँ'... तो हमारी इस्मालिया कॉलेज में– 'मैं अज्ञानी हूँ'–हे गुरुदेव, हे महाराज, हे बापाजी मैं अज्ञानी में अज्ञानी हूँ। मैं एक मार्क ला सकता हूँ। अरे ! तुम एक लाओ तो हम मींडा (शून्य) चढ़ा देगा, एक करोड़ बना देगा और वो अक्ल वाले लोग डबल मार खाएगा। ये बुद्धि का विषय नहीं है... हमने कोई शर्त नहीं रखी–मेरे गुरुजी गुणातीत ने ! शास्त्रीजी महाराज ने, योगीजी महाराज ने ! जूनागढ़ में एक मुस्ल्ला था। अल्ला-तल्ला (कहता था स्वामी को) ! गुणातीत बोलते हैं–जाओ आत्यंतिक कल्याण ! वो साथीदार–जो साथ में रहते हैं, जो महिमा गाते हैं... समझते हो ? मेरे साथीदार हो, मेरे साथ रहने वाले हो। लेकिन ये बात नहीं समझते हो पूरा। **वो भी आज पूरा समझ लेना कि हमने परम सत्य स्वरूप को काम नहीं करने दिया।** जीसस को मार डाला, बुद्ध को परेशान किया, राम को जंगल में भेजा, कृष्ण को (गोवालिया) चरवाहा समझा। धन्य-धन्य-धन्य सहजानंद को, सब को पटा कर काम कर लिया और उसका हम भी वारिसदार हैं। मत समझना (हमने) पूजन किया, (और) काम बन गया। मैं आपका दिल चाहता हूँ, मैं आपकी भावना चाहता हूँ, मैं आपकी उर्मी चाहता हूँ।

मैं, पप्पाजी, स्वामिजी एक निमित्त हैं। बहनों का ये काम किया और एक बहुत बढ़िया काम करने वाले हैं। वो क्या काम करने वाले हैं ? तुम लोगों ने हमारा पक्ष रखा, हमारे कारण संत लोग विमुख हो गए। तो हम को भी एक उमंग है। क्या उमंग है कि जो अगासकर साहेब बोला कि गुरु के पांव में पड़ोगे तो गुरु आपको हृदय तक ग्रहण करके आपका त्रिलोचन खोल देगा। दूसरी चीज जो बोला– निर्वाण– आत्यंतिक कल्याण ! कल्याण नहीं, (जन्म-मरण के) चक्कर में नहीं पड़ने का है। धी एण्ड ऑफ धी इन्फिनिट जर्नी ऑफ धी सोल ! करोड़ों जन्मों से चक्कर चलता है–वासना और प्रकृति का। वो ज़हर तो हम शिवजी की तरह जब कंठी देता है, वो टाईम से ले लेता है। ये गुरु गुणातीत, ये शास्त्रीजी महाराज, योगीजी महाराज की, हरिप्रसाद, पप्पा, काका की एक सर्वोपरिता है... यह भी एक बड़ी रिसर्च है और तीसरी चीज क्या देता है ? कल्याण तो है। मरने के बाद (का) क्या करना है उसे ? तो, वो ही प्रकाश-वो ही शक्ति मानव रूप में भी लो। अभी ही स्वर्ग हो जाए, वो इटर्नल लाईफ ! नित्य मुक्त होता है... मेरा बाप बोलता था– गुणातीत स्थिति ! और उसका नाम है

एकांतिक भाव ! 'एकस्य–अंतः'– अर्जुन के कुरुक्षेत्र का अंत हुआ और वो हो गया नरनारायण रूप ! ये गप्पा नहीं है। आपका कुरुक्षेत्र को हम धर्मक्षेत्र बना देगा। आपका सारथी आपका गुरु है। लेकिन वो **जड़ बुद्धि को उसके पास छोड़ देना। उसको सलाह देने का छोड़ देना। प्रार्थना करना।** कैसी प्रार्थना करना ? गोरधनभाई ने बोला– 'गुरुदेव के चरणों में, हे गुरुदेव चरणों में शीशनामी (बुद्धि छोड़ कर) दीनता उच्चारता हूँ। मेरे को ये तत्त्व का, स्वरूप का ज्ञान बिलकुल नहीं है। हे गुरुदेव तेरे असीम अनुग्रह से मेरे अंदर की चेतना को तू जाग्रत करना।'

...सच्चे गुरु कभी आज्ञा नहीं करेगा, सच्चे गुरु कभी आग्रह नहीं करेगा। सच्चे गुरु लाईट हाऊस की तरह खाली प्रकाश फेंकेगा। और सब अपने ऊपर ले लेगा–उसका नाम योगीजी महाराज। और वो एक वारसा दे गया है, बख़्शिश दे गया है। तो तुम प्रेम से उस सत्य का–उसकी बख़्शिश का-मौज का टोटल स्वीकार कर लो। वो तुमेरा आंतरिक पूजन हो गया। मानसिक पूजन हो गया। ऊपर ऊपर से टीका-टपका किया और पचास, सौ-दो सौ रुपये दे गया–यह पूजन नहीं है। पूजन तो वो है कि उसको अंहकार नहीं जँचता है, तो दूसरे से कटाक्ष में भी मत बोलो। सामने आये मुक्त दिव्य हैं, यह मानने में क्या जाता है आपका ? कोई तुमको बोला- ए बुद्धु ! ए गधा ! **आपको आध्यात्मिकता में जाना हो तो** हँसना। क्या हँसना ? हे महाराज, हे स्वामी, हे शास्त्रीजी महाराज, हे योगीजी महाराज, भगतजी महाराज, जागा स्वामी, हे पप्पा, हे काका, हे स्वामिजी, हमको बल देना, उसने हमको गधा बोला है...

गुरुजी के साथ आपका कोई संबंध है कि ? कौनसा संबंध है ? कौन से प्रकार का आपका गुरुजी के साथ संबंध है ? कि खाली बोलते ही रहते हो ? नौकर जैसा संबंध मत रखो। गैज़ेटेड ऑफिसर जैसा तो बन जाओ। उसका लड़का हो जाओ, लड़की हो जाओ, घरवाली हो जाओ, सखा हो जाओ, सखी हो जाओ–एक हकदावा हो जाएगा। तो वो तुम्हारा माथे लेगा–अर्जुन जैसा। और **तीसरी एक भूमिका में**-त्रीलोचन खोलेगा। उसमें **तुमको संबंध वाले को दिव्य मानना ही पड़ेगा–जो अनिवार्य शर्त है। तो तुम स्वतंत्र होगा। तुमेरे प्रारब्ध चला जाएगा। तुमेरी होली मिट जाएगी।** और हमेरे जैसे–हम तो कुछ नहीं थे-तिनका था–और सब भरा था हममें। शास्त्री महाराज और योगी महाराज ने पाट पर बिठा दिया है। लेकिन एक बात है, हमको अभिमान न आ जाए, कभी भी यह विचार न आए कि मैं 'मावजीभाई' हूँ। जो कुछ भी है–वो मेरे गुरुदेव–गुणातीत। तो यह गुरु गुणातीत का, पप्पा, स्वामी और काकाजी का आज राज्य चलता है। उसको आप लोग पहचानते हैं। समझते नहीं हो लेकिन... वो जड़ प्रकृति को छोड़ो। **सद्भाव, सद्भाव, सद्भाव, और सुहृदभाव, मित्रभाव वो सच्चा पूजन है। वो पूजन आपका ईमिजिएट जीवन पलटा–युग पलटा, इसी टाईम से करता है।** करना है ? कि खाली सुनते-सुनते रहना है ? तो **आज यह मौका मिला है।**

तुम लोग ने हमेरा एक थोड़ा-सा, एक टका भी पक्ष रखा। मेरे को भी–भगवान और संत की साक्षी से एक उमंग है कि हमेरा एक 'नाम' से, आपको भी एक हज़ार गुणा पॉवर मिल जाए। एक काम करना- सुबह और शाम को फाईव मिनिट्स प्रेयर। दिल की सच्चाई से कबूल करना कि मेरे को धिक्कार हो, धन्य-धन्य योगी महाराज को, धन्य-धन्य बापा को, धन्य-धन्य शास्त्री महाराज को, जिसने बख़्शिश दिया ! धिक्कार है मुझे कि मैं तुमको पहचाना नहीं।

...तुम को स्वतंत्रता मिले–भुक्ति, मुक्ति और स्थिति मिले और हमेरी कोई शर्त नहीं है। एन्ट्री टू ऑल। लेकिन **प्राप्ति में योग्यता चहिएगा।** हमेरे वहाँ प्रवेश में कोई फार्म नहीं भराता है। **आपकी साधना भी, आपका साधन, और सब भगवान करेगा। लेकिन उसके साथ बनावट मत करना।** वाईफ-बच्चों का हो के ? लड़का-लड़की का होकर–अहं का होकर इधर बनावट मत करना। धोखाधड़ी मत करना, चालाकी मत करना कि प्रभु, काकाजी-काकाजी, मैं आपका हूँ। हम उधर टेस्ट करेगा कि तुम सच में प्रभु के हो ? और मेरे गुरुदेव का वरदान है कि जो मेरे आश्रित हो, मेरे निष्ठावाला हो, वो मेरे को–मेरा भक्त पसंद है। वेश्या को भी प्रभु ने निर्गुण करी !

कसर दो चीज की है- एक उत्कृष्ट श्रद्धा की कसर है और दूसरी–महिमा की। फिर भी आपको धन्यवाद ! आपका सब पाप हो, कसर हो, अभी तक का जो कुछ भी हो, ज़हर हो, वो सब हमको, स्वामिजी को, पप्पाजी को, बा को दे दो। आप अमृत लो। **कोई भेदभाव में मत पड़ना।** पप्पाजी, स्वामिजी, हमेरी–सारी दुकान में एक ही माल मिलेगा। उसकी **फ्रेम अलग होएगी, चश्मा एक ही होगा-निर्दोषबुद्धि का, दिव्यभाव का, निर्गुणभाव का।** और हम सब एक गुरु गुणातीत

और महाराज का प्रकाश हैं, उसके बैल हैं, उसके सेवक का सेवक है। धन्यभाग मानता है **निमित्त बन कर हम एक बड़ा गुणातीत का सार्वभौम स्वराज्य निश्चित करने वाला है। सबके लिए एन्ट्री होगी...**

एक मिनिट धुन कर लें—महाराज, सबको एक ही आशीर्वाद देवें—प्रकाश देवें कि व्यवहार नड़े नहीं और मुश्किलें पहले जल्दी ठीक हो जाएं, तकलीफ दूर हो जाए। नया (प्रारब्ध खड़ा) मत करना... जय स्वामिनारायण।'

(ध्वनिमुद्रण से संकलित प.पू. काकाजी महाराज के आशीर्वचन)

✡✡✡

भजन

(राग- ऐ मेरे वतन के लोगों....)

साखी: श्री...ई... ई... ई... मद् भागवत् में कहीं भी जैसे,
राधाजी का नाम न आए;
सच प्रगट हो ही जाता है,
चाहे जितना भी कोई दबाए,
माया के प्रपंच में फँस कर,
इतिहास न हम दोहराएं,
काकाजी के एहसानों को,
काकाजी के एहसानों को,
हम भूल से भी न मिटाएं,
हम भूल से भी न मिटाएं।

गुणातीत समाज के सृष्टा, आत्मीयता की गंगोत्री,
निर्दोषबुद्धि के क्षितिज, शूरवीर, सहृदयी काकाजी,

दृष्टाओं के तुम दृष्टा, आत्मीयता की गंगोत्री,
निर्दोषबुद्धि के क्षितिज, शूरवीर, सहृदयी काकाजी,

गुणातीत तू चैतन्यदर्शी, शास्त्रीजी योगी का अनुरागी;
निर्दोषबुद्धि के क्षितिज, शूरवीर, सहृदयी काकाजी।

स्वरूपनिष्ठा दृढ़ कराई, स्वरूपयोग तूने ही सिखाया,
बापा के संबंध वालों की
बापा के संबंध वालों की, परवरिश में जीवन लुटाया,
बन कर बापा का झमूरा, वश किए तुमने तो श्रीजी,
निर्दोषबुद्धि के क्षितिज, शूरवीर, सहृदयी काकाजी।

ज्ञान अहम् का तिमिर मिटाने, अक्षरपति धरा पर आए,
सुख धाम का यहीं पाने की
सुख धाम का यहीं पाने की, चाबियाँ अनेक बता दीं,
संबंध से सनाथ करके, ब्रह्मज्ञान का धोध बहाया,
निर्दोषबुद्धि के क्षितिज, शूरवीर, सहृदयी काकाजी।

मान्यताओं के बंधन तोड़ें,
मान्यताओं के बंधन तोड़ें,
अंतर के कुसंग को छोड़ें,
अंतर के कुसंग को छोड़ें,
प्रार्थना से आपको पहुँचें,
प्रार्थना से आपको पहुँचें,
संबंध प्रगट प्रभु से कर लें,
संबंध प्रगट प्रभु से कर लें,
देहभाव को अपने भुला कर, जीते माया से बाजी,
निर्दोषबुद्धि के क्षितिज, शूरवीर, सहृदयी काकाजी।

तेरे ताल से ताल रहे अब, सच्ची साधुता हम पाएं,
तेरे दास का दास बनें हम, सुहृद बन कर जी पाएं,
ये सूर्य जो प्रगट दिया तो,
ये सूर्य जो प्रगट दिया तो, सूरजमुखी बन जाएं,
ब्रह्मरूप हो के हम अब,
ब्रह्मरूप हो के हम अब, परब्रह्म में जुड़ जाएं,
परब्रह्म में जुड़ जाएं,
हमें देख के हर कोई सोचे, कैसे होंगे काकाजी ?
निर्दोषबुद्धि के क्षितिज, शूरवीर, सहृदयी काकाजी।

गुणातीत समाज के सृष्टा, आत्मीयता की गंगोत्री,
निर्दोषबुद्धि के क्षितिज, शूरवीर, सहृदयी काकाजी,

दृष्टाओं के तुम दृष्टा, आत्मीयता की गंगोत्री,
निर्दोषबुद्धि के क्षितिज, शूरवीर, सहृदयी काकाजी,

गुणातीत तू चैतन्यदर्शी, शास्त्रीजी योगी का अनुरागी;
निर्दोषबुद्धि के क्षितिज, शूरवीर, सहृदयी काकाजी।
जय हो, जय जय काकाजी...
जय हो, जय जय पप्पाजी....
जय हो, जय जय स्वामिजी....।

भजन

(राग—थोड़ा सा प्यार हुआ है....)

आधार है जीवन का, मूर्ति तुम्हारी...
आधार है जीवन का, मूर्ति तुम्हारी...
तेरी कृपा से टले...*हो ओ ओ ओ ओ*
तेरी कृपा से टले, जन्मों की कसर हमारी
आधार है जीवन का, मूर्ति तुम्हारी...
आधार है जीवन का, मूर्ति तुम्हारी...

जूनागढ़ के जोगी के, 'श्रीजी' ज्यों जमानती हैं
आपके लिए वैसे ही, आज भी 'काका' खड़े हैं
वाणी और वर्तन तेरा, काकाजी को प्रगटा दें
संकल्प आपका तो, जीव को जगदीश बना दे
हर एक पल जीवन की...*हो ओ ओ ओ ओ,*
हर एक धड़कन दिल की, तेरे लिए हो हमारी।
आधार है जीवन का, मूर्ति तुम्हारी...
आधार है जीवन का, मूर्ति तुम्हारी...

गुरुजी का संबंध जो काकाजी ने दिया है,
मोती के मेह बरसे, ऐसा मौका बख्शा है,
मोती का चारा अब तो, राजहँस बनकर चुग ले,
तेरे मुक्तों में अब तो 'स्व' का विसर्जन कर दें
पराभक्ति के लिए...*हो ओ ओ ओ ओ,*
तुझको राजी करने, हर क्रिया हो हमारी।
आधार है जीवन का, मूर्ति तुम्हारी...
आधार है जीवन का, मूर्ति तुम्हारी...

गुण दोष हम न देखें, भागवती तनु बना दो,
अंतर के संग्रामों का, हे प्रभु अंत ला दो
रख दिया दिव्य समाज में, दिव्यता में खो जाएं,
जहाँ हो तेरा संबंधी, वहाँ हम झुक ही जाएं
मन से लड़ने के लिए...*हो ओ ओ ओ ओ,*
मर के जीने के लिए, रहे हर पल तैयारी।
आधार है जीवन का, मूर्ति तुम्हारी...
आधार है जीवन का, मूर्ति तुम्हारी...

चातुर्मास के नियम...

29 जून 2004, मंगलवार से
22 नवंबर 2004, सोमवार तक

1. छोटी-मोटी हर एक दैनिक क्रियाओं का आरंभ भगवत्स्वरूप संत की स्मृति समेत एकाध मिनिट जपयज्ञ या अजपाजप करके ही करें।
2. जिन्हें सुविधा हो वे-शाम की धून व कथा में मंदिर आएं। जो ना आ पाएं वे अपने घर पर सुबह 20 मिनट धून व सायं आरती के बाद 20 मिनिट धून अचूक करें।
3. प.पू. काकाजी की 'पुष्प समाधि' की रोज 31 प्रदक्षिणा करें। जो रोज ना आ पायें वे चातुर्मास के दौरान जब भी मंदिर आएं तब 51 प्रदक्षिणा कर जायें।
4. सावन का पूरा महीना यानि—4 जुलाई से 31 अगस्त तक एक बारी भोजन लें।
5. 29 जून-नियम की एकादशी, 7 सितंबर-जन्माष्टमी, 24 सितंबर-जलझीलनी एकादशी, 22 नवंबर-कार्तिक शुक्ला एकादशी—इन चारों दिनों अवश्य व्रत रखें।
6. अवतार पुरुषों व भगवत्स्वरूप संतों की जीवनी एवं वचनामृत, ब्रह्मविद्या, पत्र संजीवनी, ब्रह्मप्रवाह व मोती बिखरे चौक में जैसे अध्यात्मग्रंथों एवं 'भगवत् कृपा' के मननीय लेखों का रोज नियम से अध्ययन करें या आधा घंटा संतों की परावाणी टेप द्वारा सुनें या तो वीडियो कैसेट द्वारा दर्शन व कथा का लाभ लें।
7. रोज सुबह या सायं चालीस मिनिट तेज़ वॉकिंग करें।
8. प.पू. काकाजी महाराज के साक्षात्कार के 52 वर्ष हो गए... प.पू. काकाजी 'स्वामिनारायण' मंत्र पर खूब जोर देते थे। तो, चातुर्मास दौरान रोज मंत्रलेखन का विशिष्ट नियम रखना।

छात्रवृत्ति....

श्री अक्षरपुरुषोत्तम स्वामिनारायण मंदिर - दिल्ली से जुड़े सत्संगी बच्चे
सौम्य व्यवहार के साथ-साथ अच्छे अंक प्राप्त करके
सत्संग व अपने माता-पिता का नाम रोशन करें...
इस दिशा में उन्हें प्रोत्साहित करने प.पू. गुरुजी निरंतर उद्यम करते हैं।
सो, निम्न उच्च स्तर के अंक प्राप्त करने वाले लड़के व लड़कियों को
जो कि– मंदिर की साप्ताहिक सत्संग सभा में हाज़िर होते हों,
उन लड़कों को 'योगी डिवाईन सोसाईटी' की ओर से
तथा
लड़कियों को 'अक्षरज्योति महिला केन्द्र' की ओर से स्कालरशिप दी जाएगी –

कक्षा—1-5 90% व इससे अधिक
कक्षा—6-12 85% इससे अधिक

*सूचना : इस वर्ष आपका अर्जीपत्र-मार्कशिप की एटेस्टेड कोपी के साथ **2** जुलाई, **2004**—गुरुपूर्णिमा तक निम्न पते पर भेज दें। इस अवधि के बाद आपकी अर्जी स्वीकार्य नहीं रहेगी।*

श्री प्रभाकरजी
'श्री अक्षरपुरुषोत्तम स्वामिनारायण मंदिर'
'ताड़देव', काकाजी लेन, स्वामिनारायण मार्ग, अशोकविहार-III, दिल्ली-110 052

व्रतोत्सवसूची

(1) दि. 29.5.2004, शनिवार – भगवान स्वामिनारायण का स्वधामगमन दिन
(2) दि. 30.5.2004, रविवार – भीम एकादशी, व्रत
(3) दि. 1.6.2004, मंगलवार – **प.पू. पप्पाजी का दृष्टा दिन**
गुणातीत ज्योत स्थापना दिन
(4) दि. 12.6.2004, शनिवार – **ब्रह्मस्वरूप प.पू. काकाजी महाराज का प्रागट्य दिन**
(5) दि. 13.6.2004, रविवार – एकादशी, व्रत
(6) दि. 19.6.2004, शनिवार – रथयात्रा
(7) दि. 29.6.2004, मंगलवार – देवशयनी एकादशी, व्रत– चातुर्मास प्रारंभ
(8) **दि. 2.7.2004, शुक्रवार** – ***गुरुपूर्णिमा***
(सुबह 7:00 से 9:00 ताड़देव मंदिर में मनाएंगे।)
जो उपरोक्त समय पर सुबह लाभ लेने नहीं आ सकते,
वे दिन में किसी भी समय आ करके 'गुरुपूजन' कर सकेंगे।
(9) दि. 13.7.2004, मंगलवार – एकादशी, व्रत

R.N.I. 28971/ 77

To

Air Mail
'**Bhagwatkripa**' Bimonthly Magazine
Despatched on 15th of alternate months.
If undelivered please return to :—
Printer, Publisher, Editor :—
SHRI PRABHAKER RAO *FOR* YOGI DIVINE SOCIETY- DELHI
'Taad-dev', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg,
Ashok Vihar-III, Delhi-110 052 (India) Tel.: 2722 9327, 2724 9327
Printed at : **Delux Offset Printers**
308/4, Shahzadabagh, Opp. Rohtak Road, Daya Basti, Delhi